दिव्य जीवन

Vol. XXIV	जून २०१३	No. 3

उपनिषद्–सुधा बिन्दु

अविद्यायामन्तरे वर्तमानाः स्वयं धीराः पण्डितम्मन्यमानाः।
दन्द्रम्यमाणाः परियन्ति मूढा अन्धेनैव नीयमाना यथान्धाः।।

(**कठोपनिषद्** : १/२/५)

(यमराज ने कहाह्नह्न) ''जिस प्रकार अन्धे मनुष्यों को मार्ग दिखाने वाला अन्धा (ही) मिल जाने पर (वे इधर-उधर भटकते हैं), उसी प्रकार अविद्या (प्रेय) के भीतर रहते हुए अपने-आपको बुद्धिमान् और विद्वान् मानने वाले अज्ञानी जन नाना योनियों में भटकते हुए ठोकरें खाते रहते हैं।''

श्री शिव स्तवः

प्रोफेसर एम. रामकृष्ण भट्ट, एम. ए., विद्याभास्कर

अचलगुरुगरिष्ठोद्देशसंचारशीलं
प्रचितनियमयोगोत्सादिताज्ञानमूलम्।
सुचरितबुधशिष्योत्सृष्टसद्भक्तिमालं
वचनगतिविदूरं सद्गुरुं नौम्यनीलम्।।१

मैं उन आदर्श, निष्कलंक गुरु की वन्दना करता हूँ, जो पर्वतराज के पावन क्षेत्रों में निर्विघ्न भ्रमण करते हैं, जिन्होंने अपने योग एवं तप के द्वारा अज्ञान की शाखाओं तथा मूल को भी नष्ट कर दिया है, जिन्हें अपने भक्तों एवं विद्वज्जनों से सच्ची भक्ति के कंठमाल प्राप्त हैं तथा जिनकी महिमा वर्णनातीत है।

आनन्दधाम्नि सदये सदयेशगुप्ते
ह्यानाकचारिसुयशोऽम्बरकान्तिदीप्ते।
आनद्धमाशुकरुणं शरणागताप्ते
स्वानन्दसिन्धुशिवमस्मि नतः स्वतृप्ते।।२

मैं उन स्वानन्द-सिन्धु शिव की नतमस्तक हो कर वन्दना करता हूँ जो आशु-करुणामय हैं, जो उस 'आनन्दधाम' में आसीन हैं जिसका उज्ज्वल भविष्य है तथा जो करुणामय भगवान् द्वारा सुरक्षित है, जो गगनचुम्बी सुयश की आभा से द्युतिमान् है, जो शरणागतों का प्रतिपालक है तथा जो आत्म-सन्तुष्टि का कारण है।

इच्छाबलेन परमात्मसमीकृतेन
व्युच्छिन्नशिष्यहृदयज्वरमार्यगुह्यम्।
सच्छास्त्रदेशिकमनन्यवचोऽमृतौघैः
पृच्छातृषं भुवि गुरुं शमयन्तमीडे।।३

मैं उन धर्मात्मा सद्गुरु का गुणगान करता हूँ, जो परमात्मा के समान अपने सद्-संकल्प के बल से शिष्यों के हृत्तापों को दूर कर देते हैं, जो सद्शास्त्रों की सभी शाखा-प्रशाखाओं का ज्ञान प्रदान करते हैं तथा जो अपनी विलक्षण अमृत-वाणी रूपी सरिता द्वारा भव-संशयों की पिपासा का शमन कर देते हैं।

ईशस्वरूपमसुसन्नियमेन चित्ताऽऽ-
काशे विकाशितरुणारुणमाश्रितानाम्।
आशालताश्च फलिनी रचयन्तमात्मो-
द्देशे नुमो गुरुवरं भुवि सार्वभौमम्।।४

हम उन जगद्गुरु को नमन करते हैं जो साक्षात् भगवान् शिव हैं, जो प्राणायाम के प्रभाव से हृदयाकाश में प्रदीप्त सूर्य के सदृश हैं, जो अपने शिष्यों की आशालताओं को फलित करके प्रसन्नता प्रदान करते हैं तथा जो अन्तरतम के साम्राज्य के सम्राट् हैं।

(अनुवादिका : श्री स्वामी शिवाश्रितानन्द माता जी)

इन्द्रियों का प्रत्याहार करने का अर्थ यह नहीं है कि इन्द्रियों के द्वारों को बन्द कर दिया जाये। इसका अर्थ हैह्नह्वबाह्य वस्तुओं के रूपों में पदार्थों के अस्तित्व की भिज्ञता भी न होना। किसी पदार्थ के अस्तित्व की भिज्ञता होना और फिर उसे न देखनाह्नह्वयह बात सत्ताओं की बाह्यता का बोध न होने की बात से नितान्त भिन्न है।

स्वामी कृष्णानन्द

कर्मयोग १

परम श्रद्धेय श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज

कर्म क्या है?

कर्म अर्थात् काम। गीता के अनुसार कोई भी काम कर्म कहलाता है। यज्ञ, दान और तप भी कर्म हैं। दार्शनिक अर्थ में देखना, सुनना, चखना, सूँघना, छूना, चलना-फिरना, बोलना, साँस लेना आदि सब कर्म हैं। वास्तविक कर्म है चिन्तन। वस्तुतः कर्म राग और द्वेष से बनता है।

सत् और असत् कर्म की पहचान क्या है?

सही चिन्तन करें। अपने विवेक और बुद्धि को काम में लायें। शास्त्रों के आदेशों का पालन करें। सन्देह उत्पन्न होने पर मनुस्मृति या याज्ञवल्क्यस्मृति के वचनों का अनुसरण करें। यदि आपको लगे कि 'शास्त्र असंख्य हैं, समुद्र के समान अगाध हैं; उनमें प्रतिपादित सत्य को मैं समझ नहीं पाता हूँ; उनकी गहराई मैं माप नहीं सकता हूँ। उनमें कई अन्तर्विरोध हैं जिनके कारण मैं भटक गया हूँ', तो फिर ऐसे गुरु की बात मान कर चलें जिस पर आप पूर्ण श्रद्धा और विश्वास कर सकते हैं। तीसरा मार्ग हैह्नह्नअपने अन्तःकरण की आवाज सुनना। वह अन्तर्वाणी मार्ग दिखा सकती है। ज्यों-ही अन्तर की वाणी सुनायी दे, पल-भर के लिए भी देर न करें। दृढ़तापूर्वक उसके अनुसार काम पर लग जायें, किसी से पूछने-ताछने की आवश्यकता नहीं है। प्रतिदिन प्रातःकाल चार बजे उस अन्तर्वाणी को सुनने का अभ्यास करें। यदि आपके मन में भय है, लज्जा है, संशय है, उलझन या आयास है, तो समझें कि आप गलत कर रहे हैं। इसके विपरीत यदि सन्तोष है, समाधान है, आनन्द है, तो समझें कि आप ठीक कर रहे हैं।

निष्काम कर्मयोग

निष्काम कर्मयोग की साधना में किसी प्रकार की हानि का खतरा नहीं है; न इसमें शास्त्रों का उल्लंघन है। इसका अल्प ज्ञान भी और अल्प साधना भी जन्म-मरण के महाभय से और उसके सहचारी पापों से हमें बचा सकती है। कर्मयोग के इस मार्ग से अथवा इसके ज्ञान के द्वारा निश्चित ही फल-प्राप्ति होती है। सही मनोभाव से की गयी अल्प साधना भी चित्त शुद्ध करती है। चित्त में सत्कर्मों के जो संस्कार बने रहते हैं, वे अविनाशी हैं। वे ही हमारी सच्ची सम्पत्ति हैं। वे हमें असत् कर्म करने से बचाते हैं। वे हमें शुद्ध निःस्वार्थ सेवा करने के लिए प्रेरित करते हैं। वे हमें लक्ष्य की ओर खींच ले जाते हैं। निःस्वार्थ कर्म हममें ज्ञान-बीज ग्रहण करने के लिए आवश्यक मनोभूमिका तैयार करते हैं। कर्मयोग का मार्ग निश्चित रूप से हमें अनन्त आत्मानन्द की ओर ले जाता है।

निःस्वार्थ हो कर अनासक्त-भाव से काम करें। अपनी वृत्ति को परखें। वृत्ति पूर्णतया शुद्ध होनी चाहिए। वृत्ति के अनुसार परिणाम भी भिन्न होता है। एक कहानी हैह्नह्नहनुमानघाट पर एक लड़की डूब रही थी। दो लड़के तुरन्त नदी में कूद पड़े और उन्होंने लड़की को बचा लिया। एक ने कहा कि 'इस लड़की से मैं विवाह करूँगा।' दूसरे ने कहा : ''मैंने अपना कर्तव्य किया है। भगवान् ने मुझे अपनी उन्नति करने का यह अवसर दिया है।'' इसका चित्त शुद्ध हुआ। बाहरी क्रिया दोनों की समान थी, लेकिन दोनों की वृत्ति भिन्न थी; अतः दोनों को फल भी भिन्न ही मिलना चाहिए। कभी फल की चिन्ता न करें; परन्तु काम के प्रति कभी असावधानी भी न बरतें, न निष्क्रिय ही रहें। देश और मानवता की सेवा में अपनी सारी शक्ति उँडेल दें, निःस्वार्थ सेवा में कूद पड़ें।

अपना चित्त भगवान् के चरणों में स्थिर करें। हाथों से काम किये जायें। काम करते समय भी अपना चित्त ईश्वर में ही लगाये रखें। पनिहारिन शिर पर घड़ा ले कर रास्ते पर चलते हुए अपनी सहेली से बात करती और हँसी-मजाक भी करती

जाती है, उसी प्रकार आप भी एक-साथ दो काम कर सकते हैं। काम भी करें और अपना चित्त ईश्वर में भी लगाये रखें। यह अभ्यास का विषय है। अभ्यास हो जाने पर शारीरिक क्रिया स्वाभाविक हो जाती है। चित्त के दो भाग हो जाते हैंह्नह्नएक-चौथाई भाग काम में लगा रहता है और शेष तीन-चौथाई भाग ईश्वर की सेवा, ध्यान और जप में लीन रहता है।

भगवान् श्री कृष्ण ने गीता में कहा है :

तस्मात्सर्वेषु कालेषु मामनुस्मर युध्य च।
मय्यर्पितमनोबुद्धिर्मामेवैष्यस्यसंशयम्।।

''सर्वदा मेरा चिन्तन करते रहो और साथ ही युद्ध भी करते रहो। इस प्रकार मुझमें मन और बुद्धि अर्पित करके निश्चित रूप से मुझे ही पाओगे'' (८-७)।

गाय अपने बछड़े से बिछुड़ कर जंगल में चरने जाती है, फिर भी उसका मन अपने बछड़े में ही लगा रहता है। इसी प्रकार आप भी काम करते समय अपना चित्त सीधे ईश्वर में लगायें और हाथ से उसी ईश्वर का काम करते जायें। आसक्ति का त्याग करें। सफलता और विफलता के प्रति, जय और पराजय के प्रति, लाभ और हानि के प्रति, सुख और दुःख के प्रति तथा यश और अपयश के प्रति सम भाव रखें। सजगता के साथ अपने चित्त को शिक्षित और अनुशासित करें। यह आनन्द-साम्राज्य का द्वार खोलने की एक उत्तम कुंजी है। यही कर्मयोग का रहस्य है। इसका एक और सुन्दर उदाहरण है। आया यद्यपि मालिकिन के बच्चे को खिलाती और प्यार करती रहती है, तब भी उसके मन में हमेशा उसका अपना बच्चा ही रहता है। इसी प्रकार आप भी प्रापंचिक काम-धन्धे में लगे रहते हुए भी अपना चित्त ईश्वर को अर्पण कर दें। इस पद्धति से प्रयत्न करने पर इस संसार में रहते हुए भी आप ईश्वर का साक्षात्कार कर सकते हैं। आपको इस संसार का त्याग करके जंगलों या हिमालय की गुफाओं में जाना नहीं होगा। इसीलिए श्री कृष्ण ने कहा है : ''संन्यास और कर्मयोग दोनों निःश्रेयस दिलाने वाले हैं; उनके कर्म-संन्यास की अपेक्षा कर्मयोग उत्तम है।''

फलासक्ति रखेंगे तो जन्म-मरण के चक्र में फसेंगे। तब आप मोक्ष या अमरत्व-प्राप्ति की आशा नहीं कर सकते। चित्त इस प्रकार से बना हुआ है कि फल या प्रतिफल की आकांक्षा के बिना वह कोई भी काम नहीं कर पाता। आप किसी मित्र को देख कर मुस्करायेंगे, तो यह भी चाहेंगे कि बदले में वह भी मुस्कराये। किसी को एक गिलास पानी देंगे, तो उससे कुछ-न-कुछ प्रतिफल की अपेक्षा रखेंगे। संसारासक्त मन का यह सहज गुण है। आपको अनासक्त हो कर काम करने का अभ्यास करना होगा। सावधानी के साथ मन को अपने काबू में करना होगा। धैर्य के साथ मन को अनुशासन में रखने का सतत प्रयत्न करना होगा। संसारग्रस्त चित्त वाले मनुष्य निष्काम सेवा की बात समझ ही नहीं पाते; क्योंकि उनका चित्त कल्मषों से भरा रहता है। कुछ समय तक सेवा करें। उसके बाद निष्काम कर्मयोग का तत्त्व समझ में आयेगा। प्रारम्भ में आपके सारे कर्म स्वार्थपूर्ण हो सकते हैं; लेकिन दो साल तक परिश्रमपूर्वक कर्मयोग के क्षेत्र में काम करते रहेंगे, तो हो सकता है कि केवल पाँच काम स्वार्थ-रहित हों और बाकी पंचानबे काम स्वार्थपूर्ण हों। चित्त-वृत्ति को बराबर परखते रहें और उसे शुद्ध करते जायें, तो कुछ ही वर्षों में निरन्तर प्रयत्न करते रहने पर पचास काम स्वार्थ से मुक्त हो जायेंगे। वह शुभ दिन भी आयेगा जब आपके सारे अर्थात् शत-प्रति-शत काम बिलकुल निःस्वार्थ होंगे।

यदि हम अपना सारा कर्म फलापेक्षा छोड़ कर करें, ईश्वर के लिए ही करें तथा कर्म मात्र को हम नारायण की पूजा समझें और उसके फल भी ईश्वर को अर्पित कर दें, तो हमारा चित्त सत्त्वगुण से भर जायेगा। प्रत्येक क्षण यही चिन्तन करें कि आपका काम, जीवन और प्रत्येक साँस ईश्वर के लिए ही हैं तथा ईश्वर के बिना जीवन निष्प्रयोजन है। क्षणार्ध के लिए यदि काम-काज के बीच ईश्वर का विस्मरण हो जाये, तो उससे विरह-वेदना का अनुभव करें। *(अनूदित)*

आपका शान्ति-दूत :

अपने प्रति दयालु कैसे बनें–२

परम श्रद्धेय श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज

आपकी वास्तविक भलाई

बाइबिल की 'गोल्डन टेलेन्टस' (स्वर्णिम सिक्कों) की कहानी हम सभी जानते हैं। यह हमें विशेष रूप से इस तथ्य की शिक्षा देने के लिए है कि हम वर्तमान में कैसे व्यवहार करते हैं। भगवान् ने जो–कुछ हमें प्रदान किया है, उसका उपयोग आप कैसे करते हैं? भगवान् ने अपनी ओर से आपके ऊपर दिव्य कृपा की वृष्टि की हुई है। किन्तु यदि इन सब वरदानों को प्राप्त करके भी इस दिव्य कृपा का, इस अद्भुत कृपा का मूल्य समझने से इनकार कर देते हैं, तो आप सर्वाधिक अभागे व्यक्ति हैं। तब आपका निजी जीवन घबराहट, अशान्ति और उलझनों मेंह्वह्वसदैव असन्तुष्ट, सदा बड़बड़ाते और कुढ़ते हुएह्वह्व अपने–आपको कोसते हुए ही बीतेगा। अपना मित्र होना और अपना सबसे बड़ा शत्रु न बनना, यह निर्णय आपका है। स्वयं अपने प्रति सही दृष्टिकोण रखना या न रखना तथा अपने–आपके साथ ठीक व्यवहार करना अथवा न करना, यह निर्णय भी आपने ही करना है। और इसके साथ ही, आप स्वयं अपने प्रति हानि करने वाले अन्य किसी से बढ़ कर, स्वयं ही हैं!

महान् गुरु आदि शंकराचार्य ने कहा है, ''ये तीन वस्तुएँ वास्तव में दुर्लभ हैं जो कि भगवान् की कृपा से ही प्राप्त हो सकती हैं : मनुष्य–जन्म, मोक्ष की इच्छा और महापुरुषों का संग।'' आपको ये तीनों प्राप्त हैं। इन तीनों की ओर ध्यान देने का प्रयास करें और देखें कि अब तक आप स्वयं अपने प्रति कितने दयालु रहे हैं। आप परम पिता परमात्मा की सन्तान हैं; अतः यह आपका अधिकार है कि आपके साथ दिव्यतापूर्ण व्यवहार हो। क्या आपने अपने साथ वैसा व्यवहार किया है, जैसा किया जाना चाहिए? यह शरीर एक चलता–फिरता मन्दिर है, परमानन्द–प्राप्ति के लिए किये जाने वाली साधना का यह एक उपकरण आपको दिया गया है। जीवन्त परमात्मा के इस महान् मन्दिर के मिलने का उद्देश्य ही यदि आपने नहीं समझा है और इसे सुख भोगने का स्थान मात्र ही माना है, तब तो कष्ट और दुःख आपसे दूर नहीं हैं।

इन्द्रियों की प्रकृति तो स्वभावगत है और यदि आप इनका उपभोग करते रहते हैं, तो ये आदी हो जाती हैं और एक बार जब ये उस सुखोपभोग की आदी हो जाती हैं तब फिर ये आपके वश में नहीं रहतीं। तब फिर आपका उन पर नियन्त्रण नहीं होता; बल्कि आप उनके नियन्त्रण में हो जाते हैं। यदि आप स्वयं को इस तरह से वश में हो जाने देते हैं, तब आप स्वयं अपने प्रति अत्यन्त निर्दयी हैं। आपको मालूम होना चाहिए कि आपकी भलाई किसमें है।

दयालु और निर्दयी व्यक्ति होने का मापदण्ड क्या है? निर्दयी व्यक्ति दूसरों को हानि पहुँचाता है; किन्तु दयालु व्यक्ति दूसरों को प्रसन्नता एवं सुख देने का प्रयत्न करता है। उदाहरण के लिए, उस भले समारी की प्रसिद्ध कहानी हम सभी जानते हैं, जिसने घायल व्यक्ति का अत्यन्त स्नेहपूर्वक उपचार किया था। यदि किसी को कोई कष्ट हो, चोट अथवा दर्द हो तो दयालु व्यक्ति उसके कष्ट को दूर करके उसे स्वस्थ करने एवं प्रसन्नता देने का प्रयत्न करता है। वह किसी को भी चोट नहीं पहुँचाता तथा सभी को सुख और प्रसन्नता देने में सहायक होता है। निर्दयी व्यक्ति इसके विपरीत करता है।

अब आप अपने ऊपर दृष्टि डालें। आपका अपने शरीर, मन एवं इन्द्रियों के साथ, आपके सम्पूर्ण व्यक्तित्व के साथ कैसा सम्बन्ध और व्यवहार है? क्या आप इसके प्रति जागरूक हैं कि आपके लिए क्या अच्छा है और क्या अच्छा नहीं है? क्या आपने यह जानने का प्रयत्न किया है कि किस ओर आपकी सर्वोत्तम भलाई है और किस ओर जाने में हानि है? यह जान

लेने पर क्या आप किसी निश्चय पर पहुँचे हैं? कठोपनिषद् में एक अत्यन्त गहन आध्यात्मिक जिज्ञासु को यह विवेकपूर्ण शिक्षा देते हुए बताया गया है कि प्रत्येक मनुष्य के सामने दो रास्ते होते हैं, एक मार्ग तो सुखों पर आधारित होता है जो अत्यन्त मोहक दिखायी देता है, जब कि दूसरा कठिन प्रतीत होता है और मनमोहक भी नहीं लगता, किन्तु यह भलाई की ओर ले कर जाने वाला होता है। अधिकांश संख्या में लोग आकर्षक और सुखदायक दिखने वाले मार्ग का अन्धानुकरण करते हैं, यह प्रश्न करने के लिए भी कभी एक क्षण को नहीं रुकते कि यह इतना आकर्षक दिखायी देने वाला मार्ग उन्हें वास्तविक भलाई और सदा रहने वाले सुख की ओर ले कर जायेगा?

प्रायः लोग मोहक पथ की ओर अन्धाधुन्ध दौड़ लगाते हैं; किन्तु परिणाम में उन्हें दुःख ही हाथ लगता है। फिर भी थोड़े से ऐसे गिने-चुने लोग हैं जो आकर्षक प्रतीत होने वाले तथा प्रथम दृष्टि में दुःखदायी प्रतीत होने वालों को भली-भाँति जाँचते हैं, और फिर तत्काल दिखायी देने वाले के परे, उनकी चरम परिणति तक देखने का प्रयत्न करते हैं। तब उन्हें पता चल जाता है कि कठिन, किन्तु सही पथ ही उनकी वास्तविक भलाई का पथ है। वे समझ जाते हैं कि मोहक पथ में आरम्भ में रस आयेगा; किन्तु बाद में दुःख और पश्चात्ताप उत्पन्न करेगा। वे केवल मनमोहक एवं सुखकर दिखायी देने वाले पथ के धोखे में फँस कर उसकी ओर नहीं दौड़ते, बल्कि सोच-विचार कर निश्चयपूर्वक भले पथ का चुनाव करते हैं। ये लोग जीवन में सुखी रहते हैं। ये लोग अपने प्रति कठोर तो रहे; किन्तु स्वयं के प्रति दयालु रहे। अपने प्रति की गयी यह दया अन्ततः इनकी वास्तविक भलाई सिद्ध हुई।

जीवन के मूलभूत मूल्यों में से एक हैह्वह्वस्वस्थ शरीर का होना। अतः व्यक्ति को ध्यानपूर्वक स्वास्थ्यपूर्ण स्वभाव अपनाना चाहिए। स्वास्थ्य को नष्ट करने वाली आदतों से बचना चाहिएह्वह्वभले ही वे कितनी भी आकर्षक प्रतीत हों। यह बात भली-भाँति जानते हुए भी कि धूम्रपान से फेफड़ों का कैंसर होता है, जो व्यक्ति धूम्रपान का चयन करता है, वह निश्चित रूप से अपने प्रति दयालु नहीं है। जो व्यक्ति इतना मूर्ख है कि अत्यधिक मदिरापान करता रहता है, वह निस्सन्देह अपने प्रति निर्दयी है। वह अन्ततः शराबी बन जायेगा अथवा वह अपने बजट का सन्तुलन अधिक आवश्यक वस्तुएँ लेने के लिए ठीक नहीं रख पायेगा। यह सब जानते हुए भी आधुनिक समाज में विश्व-भर में असंख्य लोग मदिरापान, धूम्रपान और स्वास्थ्य के लिए अन्य हानिकारक पदार्थों के खान-पान में लगे हुए हैं।

आश्चर्य नहीं कि वे लोग कष्ट भोगते हैंह्वह्वस्वास्थ्य के प्रति भयानक आदतें अपने साथ व्याकुलता, कष्ट, अवसाद और दुःख ले कर आती हैं। फिर भी वे लोग संसार को और भगवान् को दोष देते हैं। वे अपनी ऐसी दशा के लिए स्वयं अपने-आपके अतिरिक्त अन्य सभी पर दोषारोपण करते हैं। वे कभी नहीं सोचते कि उनकी ऐसी दशा का कारण भगवान् की निर्दयता अथवा समाज, उनका काम-धन्धा अथवा उनका मालिक नहीं, बल्कि वह स्वयं हैं। उनके कष्टों का कारण उनका अपने प्रति उदार होने में असफल होना है, क्योंकि उन्होंने ईश्वर-प्रदत्त उपहार को पहचाना नहीं है। ईश्वर के वरदानों के साथ यदि स्वयं अपने प्रति की जाने वाली दया को जोड़ दिया गया होता, तो हमारा यह संसार एक अत्यन्त सुखी संसार होता। दुर्भाग्यवश हम स्वेच्छापूर्वक अपने सुखों को नष्ट कर रहे हैं।

स्वामी शिवानन्द जी ने स्वास्थ्य-साधना पर अत्यधिक बल दिया है। वे सदैव कहते हैं, ''मिताहार करें'' और साथ ही समय-समय पर उपवास करने को भी कहते हैं। अपने इस शरीर-रूपी मन्दिर को भली-भाँति रखें। शारीरिक और मानसिक स्तर पर, स्वयं अपने प्रति भले बनें तथा उच्चतर दृष्टि सेह्वह्वनैतिक और सदाचार की दृष्टि सेह्वह्वभले बनें। अच्छा आचरण एवं उचित विचार रखें, अन्यथा आप स्वयं को कर्म के महान् सिद्धान्त की गलत ओर झोंक देंगे। यदि आप वैश्व नियम का उल्लंघन करते हुए दूसरों के प्रति कुछ अनुचित करते हैं अथवा हानि पहुँचाते हैं तो यह आपके ऊपर ही पलट कर आयेगा। आप जो-कुछ भी करते हैं, उसका फल आपको भोगना ही पड़ेगा। नैतिक नियमों का उल्लंघन, भविष्य के लिए दुःख-कष्टों के बीज बो देता है।

(अनुवादिका : श्री स्वामी शिवाश्रितानन्द माता जी)

स्वामी शिवानन्द एवं आध्यात्मिक पुनरुत्थान ३

परम पावन श्री स्वामी कृष्णानन्द जी महाराज

संसार का ज्ञान, लौकिक जगत् के तथ्यों को एकत्रित करना अथवा सूचनाओं का संग्रह करना मात्र नहीं है। इसकी भीतरी क्रिया का भी एक विशेष अन्तरावलोकन अनिवार्य है; क्योंकि मनुष्य का अन्तः और बाह्य जीवन इनके साथ जटिल रूप से बँधा हुआ है। अध्ययन द्वारा गम्भीर शिक्षण, चिन्तन और गुरु-सेवा से विविध गहराइयों और विविध रंगों वाले इस संसार में जब अपने व्यक्तित्व और स्वत्व का ज्ञान प्राप्त होता है तो समाज के साथ संयुक्त होने की कला को खोजना सरल हो जाता है। सत्य तो यह है कि जिसे मानवता की गहन आध्यात्मिक प्रकृति का ज्ञान नहीं है, जो (आध्यात्मिक प्रकृति) मनुष्य के व्यावहारिक कार्यकलापों में समाज को समाविष्ट करती है, उसके लिए यह सामंजस्य (adjustment) सम्भव नहीं है। व्यक्ति अथवा समाज का उद्देश्य व्यक्तिगत, सामाजिक, राजनैतिक और सार्वभौमिक मूल्यों का ज्ञान प्राप्त करना है जो एक-दूसरे से सम्बद्ध हैं और एक सामान्य लक्ष्य द्वारा निर्धारित हैं जिस लक्ष्य की ओर चेतन अथवा अचेतन रूप से ये सब नियोजित हैं। ईश्वर, मोक्ष और अमृतत्वह्वह्वइन सर्वबोधगम्य शब्दों में जीवन के शाश्वत मूल्य समाविष्ट हैं और सम्भव है अज्ञानी मनुष्य इनके प्रति जागरूक न हो, पुनरपि वह जो-कुछ देखता है, सुनता है और समझता है, उसके आधार पर दैनिक संघर्षों में, इन मूल्यों को समझने के लिए उसका मन अज्ञान के अन्धकार में भटकता रहता है।

मानव की आत्मा को इस महान् सत्य के प्रति जागृत करना स्वामी शिवानन्द का प्रथम उद्देश्य था। उनके द्वारा विरचित अनेक ग्रन्थ विविधता लिये हुए उन क्षुधार्त आत्माओं की क्षुधा को शान्त करते हैं जो भोजन की खोज में हैं; किन्तु ज्ञान के अभाव में प्राप्त नहीं कर पाते।

उनकी रचनाओं की विशेषताएँ

स्वामी शिवानन्द ने मानव-जीवन के प्रत्येक पक्ष की ओर ध्यान देते हुए उसकी सर्वतोमुखी प्रगति हेतु योजना के अनुसार अपनी रचनाओं में विविध विषयों को समाविष्ट किया। ये रचनाएँ विस्तार सेह्वह्वशरीर-रचना-शास्त्र (anatomy), सामान्य जन्तु तथा वनस्पति-शास्त्र (physiology), स्वास्थ्य (health), स्वास्थ्य-विज्ञान (hygiene) और स्वास्थ्य एवं स्वच्छता सम्बन्धी ज्ञान, शारीरिक व्यायाम, प्राथमिक उपचार और रोग चिकित्सा, हठयोग की क्रियाओं में भौतिक शरीर का अनुशासन, प्राणायाम, बन्ध, मुद्रा और वे क्रियाएँ जो गर्मी-सर्दी, भूख-प्यास आदि प्रकृति के विपरीत द्वन्द्वों के आक्रमण का निराकरण करने के लिए शरीर को तैयार करने और इसे पूर्णत्व देने के लिए समस्त विषम विधाओं का ज्ञान देने वाली हैं। इसके अतिरिक्त, एक सम्पूर्ण मनोवैज्ञानिक विश्लेषण, भीतर के मनुष्य (inner man) के व्यवहार और कार्यह्वह्वमानसिक प्रकृति, स्वेच्छाचारी वृत्ति, प्रभावी प्रकृति, नैतिक और तर्कसंगत प्रकृति, जो जीवन के मूल्यों को निःशेष रूप से प्रभावित और निश्चित करती है; मनुष्य के कर्तव्य, परिवार, समाज और राष्ट्र से उसके सम्बन्ध; संसार में, ब्रह्माण्ड में उसका स्थान, राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध; संसार से उसका सम्बन्ध; सामाजिक, नैतिक और राजनैतिक रूप; आध्यात्मिक और धार्मिक मूल्यों में उसका ज्ञान, मानव-जीवन के अन्तिम लक्ष्य की विशेषताओं पर बोधगम्य एवं मर्मभेदी विचारणा तथा इस लक्ष्य की प्राप्ति हेतु प्रकृति का गहन विवेचन आदि विस्तृत विषयों पर स्वामी जी ने अपनी अमूल्य रचनाओं में प्रकाश डाला है।

इन विषयों के अपने भाष्यों में, जो प्रवचनों के प्रत्यक्ष

व पृथक् जगत् में विशाल रूप में फैले हुए हैं, स्वामी शिवानन्द न केवल वैज्ञानिक, ज्ञानी और समाज के बौद्धिक वर्ग को ही सम्बोधित करते हैं; वरन् भक्त, श्रद्धालु, बुद्धिमान् तथा उच्चतर नियमों से अनभिज्ञ जनसाधारण को, आध्यात्मिक साधकों, संन्यासियों, गृहस्थियों, परिव्राजकों, व्यापारियों, महिलाओं और बच्चों को भी समान रूप से सन्देश देते हैं। उनके लेखों के अवधानपूर्ण अध्ययन से हम देखेंगे कि उनका आग्रह अधिकतर हृदय से है, भावों से है और उनके उपदेश प्रायः व्यावहारिक प्रकृति के हैं जो समाज के हर वर्ग के मनुष्य के लिए दैनिक जीवन में तत्काल व्यवहार में लाने योग्य हैं।

उनकी रचनाएँ वास्तव में विविध योगों पर लम्बी वार्ता हैं जैसे (१) ज्ञानयोग अथवा प्रकृति के रहस्यों को अनावृत करने के लिए बौद्धिक तथा वैज्ञानिक बुद्धि की दार्शनिक कला और परमेश्वर के नियमों का पालन करते हुए ज्ञान, सत्य और न्याय का जीवन यापन करना; (२) राजयोग अथवा गहन आध्यात्मिक आत्म-विश्लेषण, ध्यानपूर्वक अध्ययन, आन्तरिक घटकों का संयम, मनोवृत्तियों का संशोधन और इस प्रकार मनुष्य को उसकी निरंकुश वृत्तियों को संयत करने के लिए शिक्षण और आत्मा अथवा पुरुष की सार्वभौमिकता में अपनी स्थिति का बोध; (३) भक्तियोग अथवा आध्यात्मिक प्रेम और भक्ति जो विश्व के ऐश्वर्यशाली अधीश्वर को समर्पित हो जो दयालु है, करुणा का सागर है, सम्पूर्ण सृष्टि का पिता है, जिसके द्वारा मनोधर्म, जैसे मनुष्य को अपने माता-पिता, बच्चों, गुरुजनों, मित्रों और जीवन-साथी के साथ सम्बन्धों में बाँधना आदि का परमेश्वर की सार्वलौकिक प्रकृति में केन्द्रित होने पर उदात्तीकरण और उत्कर्ष हो जाता है, क्योंकि मोक्ष की कामना से जब मनुष्य पूर्ण रूप से स्वयं को परमेश्वर के प्रति समर्पित कर देता है तो वे भी उसकी इच्छा को पूर्ण करते हैं; (४) कर्मयोग अथवा आध्यात्मिक प्रक्रिया का विज्ञान और कला, जीवन में प्रत्येक कर्म और प्रत्येक कर्तव्य को अत्युत्तम ढंग से करना, वह चाहे शारीरिक हो, मानसिक हो, नैतिक हो अथवा आध्यात्मिक होह्वह्वउसे परम देव के योग से संयुक्त करना और ये सब आन्तरिक और बाह्य गतिविधियों का अप्रभावी साक्षी बन कर, अपने व्यक्तित्व को परमेश्वर के प्रति समर्पित करके अथवा परब्रह्म की सर्वव्यापकता की सतत प्रवाहित हो रही चेतना के साथ युक्त हो कर सम्भव है; (५) हठयोग अथवा ध्यान और आभ्यन्तर अनुशासन के उच्चतर योग के अभ्यास हेतु व्यक्ति को तैयार करने के दृष्टिकोण से भौतिक शरीर, स्नायु-तन्त्र और प्राणिक ऊर्जा को अनुशासित करना; (६) कुण्डलिनीयोग अथवा व्यक्ति की अत्यन्त रहस्यात्मक सुप्त एवं प्रकृष्ट शक्ति को जागृत करना, जिसे मन और प्राण के प्रशिक्षण द्वारा जागृत करके प्रकृति के असीम स्रोत सहज ही प्राप्त करके मनुष्य ब्रह्माण्ड के साथ एकत्व की चेतना को प्राप्त कर लेता है; (७) मन्त्र, यन्त्र और तन्त्र योग शुद्ध रूप में कुछ रहस्यमयी प्रक्रियाएँ हैं जिनसे आध्यात्मिक ऊर्जा और आभ्यन्तर स्फुरण उत्पन्न करके अथवा इसके बिना भी सांकेतिक विशेष ध्वनि, सूत्र, चित्र और अनुष्ठान द्वारा सम्बद्ध करके मनुष्य को उसकी निम्न प्रकृति के बन्धन से मुक्त करके उच्चतर प्रकृति के प्रदेश तक ऊपर उठाया जाता है; (८) जपयोग अथवा दिव्य नाम संकीर्तनह्वह्वअक्षर, शब्द, उक्ति अथवा वाक्यों के संकीर्तन का अभ्यास जो मनुष्य के अन्तःकरण में समन्वय और ज्ञान का प्रकाश लाने की अवस्था में सहायक है; (९) लययोग अथवा कार्यों को कारणों में, स्थूल को सूक्ष्म में और चेतना तथा शक्ति को निम्न से उच्चतर में विलीन करके मन को आत्मा में विलीन करने की विधा; स्वामी शिवानन्द दुर्बल इच्छा-शक्ति के मनुष्यों के लाभ के लिए इन विविध योगों के संयोग में विशेष प्रभुत्व दर्शाते हैं और साधकों को विश्वास दिलाते हैं कि यदि लगन, दृढ़ निश्चय और धैर्य के साथ अभ्यास किया जाये तो सफलता निश्चित है।

(हिन्दी रूपान्तरण : श्रीमती गुलशन सचदेव)

मानव से ईश-मानव :

कुप्पुस्वामि का गेरुआ वस्त्र धारण करना २

श्री एन. अनन्तनारायणन्

जलपोत मद्रास पहुँचा। कुप्पुस्वामि अपने एक मित्र के घर गये। वह मित्र घर पर नहीं था; अतः उसकी पत्नी ने दरवाजा खोला। कुप्पुस्वामि घर के बाहर खड़े-खड़े ही गाड़ीवान को सामान उतार कर घर में रखते हुए देखते रहे। जैसे ही पूरा सामान उतार लिया गया, उन्होंने मित्र की पत्नी से कहा-"कृपया उसे बता दें कि मैं जा रहा हूँ।" और वह वहाँ से चल दिये। कुछ ही क्षणों में उनका मित्र घर आ पहुँचा और जैसे ही उसने पत्नी से इस घटना के सम्बन्ध में सुना, वह तेजी से भागा और कुप्पुस्वामि को जा पकड़ा। उसने बार-बार कुप्पुस्वामि से अपने साथ घर चलने और कम-से-कम एक बार भोजन करने का अनुरोध किया; किन्तु डॉक्टर अपने निश्चय पर दृढ़ थे। वे शीघ्रता से रेलवे स्टेशन की ओर चले, जहाँ गाड़ी मानो उन्हीं की प्रतीक्षा में रुकी हुई थी। वे गाड़ी में बैठ गये।

उनके बैठते ही गाड़ी ने सीटी बजायी और प्लेटफार्म से चल दी। शीघ्र ही गाड़ी ने गति पकड़ ली और कुप्पुस्वामि का हृदय एक विलक्षण शान्ति से भर गया। मानो संसार का समस्त भार उनके कन्धों से उतर गया हो। मन-ही-मन उन्होंने भगवान् को धन्यवाद दिया।

भगवान् शिव की नगरी, मोक्ष[१] का द्वार, वाराणसी उनका गन्तव्य था। रास्ते की किसी वस्तु-स्थिति में उन्हें रुचि नहीं थी। न किसी से बातचीत, न कोई मनोरंजन और न ही किसी दृश्य को देखने की उनकी इच्छा थी। मार्ग में आने वाले स्टेशनों का शोरगुल, जाने वाले यात्रियों की आवाजें, कुछ भी उनके कानों में मानो प्रवेश नहीं कर रहा था। उस समय कुप्पुस्वामि के मन में एक ही विचार निरन्तर घूम रहा था, "अब मुझे निश्चित रूप से परमात्म-साक्षात्कार करना है।"

इसी एकमात्र विचार से पूरित मन को लिये हुए कुप्पुस्वामि वाराणसी पहुँचे। हिन्दी भाषा के एक शब्द तक से वे परिचित नहीं थे। उत्तर भारत के रीति-रिवाजों और व्यवहार के प्रति वे पूरी तरह अनजान थे। एक मिठाई की दुकान पर पहुँच कर उन्होंने दूध माँगा। दुकानदार ने उन्हें मिट्टी के कुल्हड़ में दूध दिया। कुप्पुस्वामि ने सोचा कि जैसे दक्षिण भारत में दूध बेचने वाला पीतल के गिलास में दूध देता है, उसी प्रकार उत्तर भारत में मिट्टी के बरतन में देते होंगे, अतः दूध पी लेने के बाद उन्होंने कुल्हड़ को धो कर दुकानदार को लौटाना चाहा; दूध वाले ने इस पर घृणा से मुँह बिचकाते हुए डाँट कर कहा, "दूर फेंक दो इसको।" किसी से भी एक कड़ा शब्द न कहने वाले कुप्पुस्वामि बिना कोई भी प्रतिक्रिया का भाव मन में लाये शान्त बने रहे।

गंगा में स्नान करने के उपरान्त, तंग घुमावदार गलियों में से होते हुए वे विश्वनाथ भगवान् के मन्दिर में पहुँचे। उन्होंने प्रभु के समक्ष खड़े हो कर प्रार्थना की, मौन भाषा में सामने खड़े हुए मानो वे प्रभु से वार्तालाप कर रहे थे। उनकी दृष्टि एकटक लिंग पर जमी हुई थी, मन पूर्णतया स्थिर था, इन्द्रियाँ तो मानो मृतप्राय ही थीं। उन सौभाग्यपूर्ण क्षणों में उनका समस्त व्यक्तित्व एक अद्भुत अनन्त कम्पन से भर गया था।

वाराणसी! कुप्पुस्वामि ने सोचा था कि यह एक छोटी-सी तीर्थस्थली होगी, जहाँ वह किसी वृक्ष के तले बैठ कर मस्ती से प्रभु-भजन कर सकेंगे और संयोगवश यदि कोई राहगीर यात्री भिक्षा दे देगा, तो वही खा लिया करेंगे। वे

[१] हिन्दुओं में यह प्रचलित विश्वास है कि जिनकी वाराणसी में मृत्यु होती है, उसे मोक्ष प्राप्त हो जाता है। इसीलिए भारत के सभी प्रान्तों से वृद्ध जन अपने अन्तिम दिन वाराणसी में रहते हुए बिताने के लिए आ जाते हैं ताकि शरीर छूटने पर उन्हें मोक्ष प्राप्त हो जाये।

एकान्त चाहते थे; किन्तु यह देख कर उन्हें निराशा हुई कि वाराणसी भीड़भाड़ से भरी एक विशाल नगरी थी।

उनके पास नाम मात्र धन था। रात को सोने के लिए वह रेलवे प्लेटफार्म पर चले गये। कड़ाके की ठण्ढ पड़ रही थी, यह उत्तर भारत की भीषण सर्दी के दिन थे। इसका उन्होंने सोचा नहीं था, उन्हें उत्तर भारत की सर्दी का पता भी नहीं था, उन्हें मानो एक झटका-सा लगा, किन्तु उनका मन तो भगवान् के चिन्तन में लगा हुआ था और इस गहन चिन्तन ने उनको सर्दी के प्रति उपेक्षा भाव रखने में सहायता की। एक परोपकारी सज्जन, जो इनकी दयनीय स्थिति को देख रहे थे, ने इन्हें एक कम्बल दे दिया। कुप्पुस्वामि के लिए यह भगवान् द्वारा भेजा गया वरदान था।

कुप्पुस्वामि ने अपने दाता का धन्यवाद किया। उन्होंने अपनी आकांक्षाएँ उसके सामने व्यक्त कीं। उस दयालु अपरिचित व्यक्ति ने उन्हें पण्ढरपुर जाने की राय दी और उनके लिए पूना का रेल टिकट भी खरीद कर दे दिया।

जो थोड़े से पैसे बचे थे, पूना पहुँचते ही उन्होंने वह भी दान कर दिये। इस प्रकार उन्होंने स्वयं को पूर्णतया भगवान् की दया पर छोड़ दिया। प्रभु के हाथों में उन्होंने अपने-आपको समर्पित कर दिया। वे परिव्राजक बन कर भ्रमण करने लगे। जलपोत पर उस अपरिचित व्यक्ति द्वारा उनके सम्बन्ध में की गयी भविष्यवाणी सत्य होनी आरम्भ हो गयी थी।

गत जीवन के डॉक्टर ने खाली हाथों, ईश्वर को अपना पथ-प्रदर्शक मानते हुए, अब अपना परिव्राजक जीवन प्रारम्भ किया। नासिक, पण्ढरपुर तथा अन्य तीर्थस्थलों के उन्होंने दर्शन किये। एक के बाद दूसरे गाँवों में से वे गुजरते गये। वहाँ की धरती, भाषा, लोगह्नसभी उनके लिए अनजान थे।

कुप्पुस्वामि को भिक्षा माँगने का अनुभव नहीं था, जिन्होंने सदा दिया ही था। उनको माँगने के लिए हाथ फैलाना अत्यन्त कठिन था। वे गाँव के किसी घर के आगे जाते, व्यक्ति के निकट पहुँच कर धीरे से उसके कान में कहते, ''मैं मद्रासी ब्राह्मण हूँ, मुझे भूख लगी है, क्या आप मुझे खाने के लिए कुछ दे सकते हैं?'' उनकी बात सुन कर लोग आश्चर्य से उनकी ओर देखते, क्योंकि उनका कथन उनके मुख-मण्डल से मेल नहीं खाता था। कभी-कभी कोई सत्कारशील व्यक्ति उन्हें भीतर ले जाता और बढ़िया भोजन खिलाता। भोजन करने के उपरान्त कुप्पुस्वामि आदरपूर्वक उस व्यक्ति के सामने झुकते और भगवान् से उसके लिए प्रार्थना करने के बाद वहाँ से चले जाते। एक घर के आगे वह दूसरी बार कभी नहीं जाते थे, उन्हें लगता कि वह व्यक्ति उनके सम्बन्ध में क्या सोचेगा, क्या वह इनसे ऊब नहीं जायेगा? कई बार कोई सज्जन परिवार उन्हें अपने पास ही ठहरने का अनुरोध करते; किन्तु इस भय से कि वह भले लोगों पर बोझ न बन जायें, वे चुपचाप दूसरे गाँव में चले जाते।

नंगे शिर, नंगे पाँव, नाम मात्र के वस्त्र पहने हुए, यह नया-नया अभ्यासी, महाराष्ट्र की प्रचण्ड गरमी में एकाकी घूम रहा था। कई बार किसी गाँव में पहुँचने से पहले ही रात हो जाती और इन्हें सड़क के किनारे किसी पेड़ के नीचे धरती का ही बिछौना बनाना पड़ता। और कभी खाली पेट मीलों चलते रहना पड़ता, फिर थक-हार कर भूख के अत्यधिक सताने पर जंगली अंजीर अथवा आँवले बीन कर कपड़े से मिट्टी पोंछ कर खा कर भूख शान्त करनी पड़ती।

कुछ समय तक कुप्पुस्वामि के शरीर पर दो वस्त्र रहे, फिर कुछ समय बाद उनमें से एक फट गया और वे एक ही फटा-पुराना वस्त्र पहने रहे। जब यह बहुत अधिक मैला हो जाता तो किसी नदी में धो कर वहीं सुखा लेते और फिर उसी को पहन लेते। एक गाँव के सज्जन व्यक्तियों ने उनकी ऐसी दीन-हीन स्थित को देख कर, मिल कर पैसे एकत्र किये और उन्हें नयी धोती का जोड़ा ले दिया। परिव्राजक जीवन ने कुप्पुस्वामि में धैर्य, समदृष्टि तथा सुख-दुःख में शान्त रहने का स्वभाव विकसित करने में सहायता की। इस भ्रमण-काल में वे कुछ समय खेडगाँव में योगी नारायण महाराज के आश्रम में रहे। इसी प्रकार वे कुछ समय के लिए विंध्या के निकट एक अन्य महान् योगी के पास भी रहे। अन्य कई स्थानों पर भी उन्होंने साधु-महात्माओं के दर्शन किये, उनसे मिले और उनके जीवन से बहुत-कुछ सीखा।

भ्रमण करते-करते वे चन्द्रभागा के तट पर स्थित धजल नामक गाँव में पहुँचे। यह सन्ध्या का सुहावना समय था। एक छोटी-सी चट्टान पर बैठे हुए वे छल-छल करती लहरों का मधुर संगीत सुनने लगे। उनका हृदय एक अद्‌भुत शान्ति और समरसता की तरंगें उठती अनुभव कर रहा था। उनकी इच्छा हुई कि यहीं रह कर ध्यान-प्रार्थना में समय व्यतीत किया जाये। किन्तु यहाँ कोई भी उन्हें जानता नहीं था। कौन उन्हें भोजन देगा? किसके पास रहेंगे? कुछ क्षणों के लिए ऐसे विचार उनके मन में उठे; किन्तु अगले ही क्षण उन्होंने इन विचारों को झटक दिया, ''क्या उन्होंने स्वयं को पूरी तरह से भगवान् की दया पर नहीं छोड़ दिया है?''

जब वे बैठे-बैठे इन विचारों में मग्न थे, उसी समय उन्होंने अपने कन्धों पर एक कोमल स्पर्श अनुभव किया। घूम कर देखा तो एक सज्जन प्रौढ़ व्यक्ति थे। प्रभु-नाम से कुप्पुस्वामि ने अभिवादन किया और थोड़ा झुके। वह स्थानीय अपरिचित व्यक्ति बोले, ''प्रिय भाई, यहाँ क्यों बैठे हो? एकाकी निर्जन स्थान है यह, और रात घिर आयी है...क्या यात्री हो?''

''हाँ, मैं यात्री हूँ...'' एक क्षण के लिए कुप्पुस्वामि झिझके, फिर तुरन्त भूल सुधारते हुए कहा,''नहीं, मैं यात्री नहीं, परिव्राजक हूँ, मैं प्रकृति की सन्तान हूँ।''

इस विचित्र उत्तर को सुन कर तथा उनके सुदृढ़ और सौम्य चेहरे को देख कर वह व्यक्ति उनसे बहुत प्रभावित हुआ। उसने कुप्पुस्वामि को शिर से ले कर पाँव तक अंग-प्रत्यंग को निहार कर अनुमान लगा लिया कि ये निश्चित रूप से उच्च कुल से हैं, और उन्हें अपने घर चलने का निमन्त्रण दिया। दोनों ने एक-साथ बैठ कर भोजन किया और देर रात तक बैठ कर भगवान् और उनकी महिमा के विषय में वार्तालाप करते रहे।

वह व्यक्ति धलज का पोस्टमास्टर था। वह सदाचारी, धार्मिक प्रवृत्ति लिये हुए विधुर व्यक्ति था। उसने कुप्पुस्वामि को अपने साथ रहने के लिए आग्रह किया। कुप्पुस्वामि भगवान् की यह दया देख कर मन-ही-मन आश्चर्य कर रहे थे।

कुप्पुस्वामि ने धलज में भगवन्नाम और भगवल्लीला-गान में समय बिताया। साथ ही वे दूसरों के लिए उपयोगी होने का भी प्रयत्न करते थे। अपने आतिथेय को वे खाना बनाने में, बाहर कुएँ से पानी भर कर लाने इत्यादि में सहायता करते थे। वे जंगल से लकड़ी लाने जैसे काम भी करते थे और सन्ध्या समय जब गायें खेतों से वापस लौट आतीं, तो वे उनको घर ला कर चारा दिया करते थे।

डाकखाने के चपरासी तक से भी वे प्रेमपूर्ण व्यवहार रखते थे। चपरासी सुबह नौ बजे से डाक बाँटने निकलता और दोपहर तीन बजे वापस घर लौटता था। जैसे ही वह घर पहुँचता, कुप्पुस्वामि उसे पाँव धोने के लिए ठण्ढा पानी तथा प्यास बुझाने के लिए मट्ठा देते थे। जब भी वे उसे अधिक थका-माँदा पाते, तो यह कह कर बलपूर्वक उसके पैरों की मालिश कर दिया करते कि ''मना मत करें, मुझे अपने बेटे या छोटे भाई जैसा समझें, मैं आपको यों कष्ट में नहीं देख सकता।''

धलज में एक ज्ञानी दम्भी साधू ने कुप्पुस्वामि को देख लिया और इनकी शिक्षा, अँगरेजी भाषा का ज्ञान और सेवा भाव को भी उसने देखा। उसने अपने स्वार्थ के लिए उन्हें बहकाने का प्रयत्न किया और कहा कि यदि वे इसके कहे अनुसार चलेंगे तो नाम-यश-पूर्ण अलमस्त जीवन जियेंगे। कुप्पुस्वामि बचपन से ही साधु-महात्माओं के प्रति गहन श्रद्धा-भक्ति रखते हुए भी किसी तरह से बहकावे में आ कर पथभ्रष्ट होने वाले नहीं थे; शीघ्र ही वे धलज के इस साधु का खोखलापन समझ गये और बहुत नम्रतापूर्वक उन्होंने इस सुझाव को मानने से इन्कार कर दिया।

कुप्पुस्वामि को धलज में रहते चार मास हुए थे जब कि एक दिन पोस्टमास्टर एक महिला को घर में ले आया। यह देख कुप्पुस्वामि की अन्तरात्मा ने उन्हें तुरन्त वह स्थान छोड़ देने को कहा। उसी समय विचित्र ढंग से, निकट के ही एक गाँव दिक्सल के पोस्टमास्टर एम. वी. दत्ता जिनका नाम था तथा जिन्होंने मलाया से आने वाले साधु के बारे में सुन रखा था, ने उन्हें कुछ समय अपने साथ रहने का आग्रह किया। कुप्पुस्वामि ने इसे मान लिया।

दिक्सल में कुप्पुस्वामि ने स्वयं को उनके परिवार का सेवक बना कर ही रखा। सेवा करना उनके स्वभाव में था। उनके स्वभाव के इस सेवा-भाव ने उन्हें जहाँ-कहीं भी वे रहे, एक शान्त एवं निर्विघ्न जीवन व्यतीत करने में सहायता की। कुछ समय बीतने पर कुप्पुस्वामि ने अपने आतिथेय के पास ऐसे स्थान पर जा कर रहने की इच्छा व्यक्त की, जहाँ वे कठोर तपस्या कर सकें। दत्ता जी ने उन्हें ऋषिकेश जाने की राय दी और उदारतापूर्वक रेल भाड़े तथा अन्य खर्चे के लिए २५ रुपये भी दिये।

कुप्पुस्वामि ने हरिद्वार की गाड़ी ली और वहाँ पहुँचने पर एक धर्मशाला में गये; किन्तु वहाँ ठहरने के लिए किसी व्यक्ति ने आपत्ति की। उन्हें हिन्दी भाषा का ज्ञान नहीं था; अतः आपत्ति का कारण वे समझ नहीं पाये। वे चुपचाप वहाँ से चल दिये और हरि-की-पौड़ी पर घण्टाघर के निकट सो कर वह रात बितायी।

हरिद्वार से वे पैदल ऋषिकेश की ओर चल दिये। मार्ग में सड़क के किनारे वृक्ष के नीचे आराम करने के लिए बैठ गये। उसी समय एक तांगा जंगल की सड़क पर खड़खड़ाहट की ध्वनि करता हुआ आया। ज्यों-ही यात्री उनके पास से निकला, इन्हें भिक्षु साधु समझ कर एक सिक्का उनके पास फेंक दिया। कुप्पुस्वामि उस समय इतने विरक्त एवं आध्यात्मिक भाव में थे कि उन्होंने सिक्के की ओर दृष्टि उठा कर देखा तक नहीं और वहाँ से उठ कर आगे चल पड़े। अन्ततः अब वे सन्तों की पावन धराह्नह्नऋषिकेश में पहुँच गये थे।

अँधेरा हो चुका था। अतः वे ऋषिकेश डाकघर के निकट गंगाश्रम के साथ लगती चरणदास धर्मशाला के बरामदे में ही सो गये। अगले दिन प्रातः अपने स्वभावानुसार वे बहुत शीघ्र उठ गये और अपनी साधना में लग गये। दिन का उजाला होने पर उन्होंने देखा कि वहाँ बहुत से साधु थे। उनमें से एक प्रौढ़ संन्यासी ने बरबस उनका ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर लिया। उनका नाम विश्वानन्द था। उनके मुख-मण्डल के चहुँओर एक विलक्षण प्रभा-मण्डल था। कुप्पुस्वामि आनन्दविभोर हो गये, ज्यों-ही उनकी दृष्टि उन साधु से मिली! ऐसा क्यों हुआ, उन्हें पता नहीं चला और उन्होंने अत्यन्त श्रद्धा एवं भक्ति से उनके चरणों में दण्डवत् प्रणाम किया। अत्यधिक प्रेमपूर्वक उस वृद्ध संन्यासी ने उन्हें उठाया, गले से लगाया और स्नेहपूर्वक वार्तालाप किया। दिन में कुप्पुस्वामि भिक्षा लेने के लिए काली कमली वाला क्षेत्र में गये; किन्तु उन्होंने भिक्षा देने से मना कर दिया, क्योंकि कुप्पुस्वामि संन्यासी नहीं थे। बिना भोजन प्राप्त किये जब वे लौट रहे थे, तो मार्ग में संयोगवश विश्वानन्द उन्हें मिल गये। तुरन्त ही इन वृद्ध संन्यासी के हृदय में कुप्पुस्वामि को संन्यास-परम्परा में दीक्षित करने की प्रेरणा उत्पन्न हुई और उसी दिन उन्होंने कुप्पुस्वामि को गेरुआ वस्त्र धारण करवा दिये। कुप्पुस्वामि अब समाप्त हो चुके थे, और स्वामी शिवानन्द सरस्वती का जन्म हो गया था। यह १ जून १९२४ का शुभ दिवस था।

आगामी दिन स्वामी विश्वानन्द अपने निवास-स्थान वाराणसी चले गये। वहाँ से उन्होंने संन्यास-धर्म सम्बन्धी निर्देशन देते हुए अपने नये शिष्य को एक अति संक्षिप्त पत्र लिखा। बाद में ऋषिकेश के निकट स्थित पारम्परिक कैलास आश्रम के उस समय के महामण्डलेश्वर एवं विद्वान् पण्डित स्वामी विष्णुदेवानन्द द्वारा विरजा होम का विधिवत् धार्मिक कृत्य सम्पन्न हुआ और इस प्रकार स्वामी शिवानन्द जी पूर्ण संन्यासी बन गये।[२]

(अनुवादिका : श्री स्वामी शिवाश्रितानन्द माता जी)

[२] सुप्रसिद्ध इतिहासकार एवं इण्डियन नेशनल काँग्रेस के प्रधान डॉ. पट्टाभि सीतारमैया ने एक बार श्री स्वामी शिवानन्द जी से पूछा, ''किन्तु आपने संसार का त्याग क्यों किया? इसका वास्तविक कारण क्या था?'' स्वामी जी ने तत्काल उत्तर दिया, ''संस्कार!'' ''ठीक है!'' स्वीकारते हुए विद्वान् डॉक्टर गहन विचार में लीन हो गये।

बाल-स्तम्भ :

'मदर्स डे' ३*

स्वामी रामराज्यम्

बच्चो, इस धारावाहिक कहानी में प्रस्तुत किसलय और उसकी अम्मा की डायरी के पृष्ठों को पढ़ कर तुम्हें अपनी माताओं के प्रति अपने कर्तव्यों की याद आ जायेगी; माताएँ, जो धरती पर चलती-फिरती भगवती देवी ही हैं उनके श्रीचरणों में झुक जाने का मन करेगा।

डायरी के इन पृष्ठों को बार-बार पढ़ना और सोचना कि इस कहानी के किसलय और अन्य बालपात्रों की तुलना में तुम उनसे कितना आगे या पीछे हो। पूरे जीवन-भर तुम्हें उनसे आगे ही रहना है।

१२ जनवरी १९८९ : अम्मा की डायरी

परसों की बात है। किसलय मुझसे पूछने लगाह्वह्व''अम्मा, 'मातृदेवो भव' का क्या अर्थ होता है।''

मैंने कहाह्वह्व''इसका अर्थ होता हैह्वह्व'माँ हमारे लिए भगवान् हो'।''

''माँ भगवान् की तरह होती है, यही न?''

''हाँह्वह्व'' मैंने कहा।

''अच्छा अम्मा, घर के मन्दिर में जो भगवान् जी हैं, उनकी तरह तुम भी हो न?''

मैं चुप रही।

वह बोलाह्वह्व''मैं आज तुम्हारी वैसी ही पूजा करूँगा, जैसी तुम भगवान् जी की करती हो।''

मैं सोच रही थीह्वह्वछोटा-सा लड़का यह। कैसी-कैसी बातें करता है!

''अम्मा, तुम बैठी रहना। मैं अभी आया।''ह्वह्वयह कह कर वह मन्दिर की ओर भागा। थोड़ी देर में एक थाली में फूल ले आया। कुछ देर पहले मैंने आरती की थी। आरती अभी भी जल रही थी। उसे भी थाली में रख कर ले आया, फिर उसने मेरे ऊपर फूल चढ़ाये और मेरी आरती उतारी। जिस प्रकार मैं रोज झुक कर मन्दिर में प्रणाम करती हूँ, उसी प्रकार झुक कर उसने प्रणाम किया।

मैं उस बाल-पुजारी को एकटक निहारे जा रही थी।

किसलय बोलाह्वह्व''उस दिन तुमने मुझे मूकचाण्डाल की कहानी सुनायी थी। वह भी इसी तरह पूजा करता होगा न?''

''हाँ, किसलय।''

''तुमने बतलाया था कि उसके घर में भक्तों ने लक्ष्मी जी समेत भगवान् विष्णु के दर्शन किये थे। है न?''

''हाँ।''

''विष्णु भगवान् क्यों उसके घर में रहते थे?''

*'मदर्स डे' भारत में प्रत्येक वर्ष मई माह के दूसरे रविवार को मनाया जाता है।

मैंने कहाह्नह्न''जिस घर में सन्तानें माता-पिता की सेवा-पूजा करती हैं, वहाँ तो भगवान् को रहना ही पड़ेगा। वह ऐसी सन्तानों से प्रसन्न हो कर ही उनके घरों में रहते हैं।''

''अच्छा अम्मा, उस दिन मूकचाण्डाल की कहानी सुनाते समय तुमने पुण्डलीक का भी नाम लिया था, जो अपने माँ-बाप की खूब सेवा किया करता था, उसकी कहानी सुनाओ न अम्मा।''

मैंने कहाह्नह्न''किसलय बेटे! एक बार पुण्डलीक की सेवा की चर्चा सुन कर भगवान् उत्सुक हो उठे धरतीलोक में उससे मिलने के लिए। वह पहुँचे पुण्डलीक के घर। उस समय रात थी। पुण्डलीक बहुत प्रेम से अपने पिता के पैर दबा रहा था। भगवान् ने पुकारा उसे। पुण्डलीक ने पैर दबाते-दबाते पूछाह्नह्न'कौन है?' भगवान् बोलेह्नह्न'मैं हूँ भगवान्।' भगवान् ने सोचा था कि उनका उत्तर सुन कर पुण्डलीक दौड़ा आयेगा और खुशी के मारे उनके पैरों पर गिर पड़ेगा। लेकिन ऐसा नहीं हुआ। भगवान् को पुण्डलीक की आवाज सुनायी पड़ीह्नह्न'दरवाजा खुला है, अन्दर आ जाइए।' भगवान् अन्दर आये और पुण्डलीक के पास जा कर खड़े हो गये। पुण्डलीक ने थोड़ी दूरी पर पड़ी हुई ईंट की ओर संकेत करते हुए कहाह्नह्न'उस पर बैठ जाइए।' भगवान् ईंट पर बैठ गये।''

''अरे! भगवान् ईंट पर बैठ गये! वह गुस्सा नहीं हुए?'' किसलय ने आश्चर्य से कहा।

''नहीं रे! वह तो उसकी सेवा देख कर बड़े प्रसन्न हुए।''

''वह कैसे?'' किसलय ने पूछा।

मैंने कहाह्नह्न''पहले पूरी कहानी तो सुन। थोड़ी देर बाद पुण्डलीक के पिता को नींद आ गयी। पुण्डलीक ने पैर दबाना बन्द कर दिया। भगवान् के चरणों पर झुकते हुए बोलाह्नह्न'पिता की सेवा कर रहा था, इसलिए आपको प्रणाम नहीं कर पाया। अब कर रहा हूँ प्रणाम।' भगवान् बोलेह्नह्न'मैं तुम पर बहुत प्रसन्न हूँ। तुम्हारी सेवा देखने के लिए ही मैं तुम्हारे पास आया हूँ। तुमने इस सेवा को मेरी वन्दना से भी अधिक महत्त्व दिया है। इस बात से तो मैं और भी अधिक प्रसन्न हो गया हूँ।' ''

कहानी सुन कर किसलय बोलाह्नह्न''तो अम्मा, माता-पिता की सेवा पैर दबा कर ही...।''

''नहीं, नहीं रे''ह्नह्न मैंने उसकी बात काटते हुए कहाह्नह्न''पैर दबाना तो एक छोटी-सी सेवा है। पूरी सेवा तो माँ-बाप की आज्ञाओं का पालन करने से होती है; उन्हें मान-सम्मान देने से होती है।''

''और तुम्हारी पूजा करने से भी होती है न?'' शरारत-भरी दृष्टि से मुझे देखते हुए वह बोला। मैं उसे एक चपत लगाने वाली ही थी कि वह हँसता हुआ भाग गया।

३१ जनवरी १९८९ : अम्मा की डायरी

पिछले हफ्ते मैं बीमार पड़ गयी। कमजोरी बढ़ती जा रही थी। किसलय को अपना काम अपने हाथ से करने की आदत पड़ जाये, इस दृष्टि से मैंने एक-डेढ़ महीना पहले नौकरों को वेतन दे कर लम्बी छुट्टी पर भेज दिया था। शाम का समय था। घर में किसलय के अलावा और कोई नहीं था। वह मेरे पास ही खड़ा था। बेहद उदास। लेटे-लेटे मैंने किसलय से कहाह्नह्न''बेटे! पीने के लिए एक गिलास ताजा पानी ले आ। प्यास लगी है।''

किसलय ने कहाह्नह्न''घर में तो फ्रिज का पानी है। ताजा पानी पड़ोस से ले आऊँ?''

मेरे उत्तर की प्रतीक्षा किये बिना वह भागता हुआ चला गया।

नींद की दवाओं का प्रभाव था शायद। उसके जाते ही मैं सो गयी। जब मेरी आँख खुली, तब मैंने देखा कि किसलय मेरे पास खड़ा है। पानी से भरा गिलास स्टूल पर रखा हुआ है।

''किसलय!'' मैंने आश्चर्य से कहा।

वह खड़ा रहा। बोला कुछ नहीं।

''तू कबसे खड़ा है?''

किसलय ने कोई उत्तर नहीं दिया।

''इस समय क्या बजा है?'' मैंने फिर पूछा।

''नौ।''

''तू कब गया था पानी लेने?''

''आठ बजे।''

''तू तब से खड़ा है!''

अब बोला किसलयह्वह्व''मैं सोच रहा था कि पानी देने के लिए तुम्हें कैसे जगाऊँ? नींद टूट जायेगी। मैं चला गया और तुम्हारी आँख खुल गयी, तो तुम्हें पानी कौन देगा?''

''हाय!''ह्वह्वमेरे मुँह से निकलाह्वह्व''तू इतनी देर से खड़ा है?''

मेरी आँखों में आँसू आ गये। किसलय ने मुझे पानी पिलाया। फिर बोलाह्वह्व''अम्मा, मैं नीलमणि को सुला आऊँ?''

''हाँ, जाह्वह्व'' मैंने कहा।

''अम्मा, एक बात पूछूँ? तुम कहती हो कि नीलमणि से जो-कुछ माँगो, वह दे देते हैं।''

''हाँ, फिर?''

''मैं नीलमणि से यह माँग लूँ कि तुम्हें कभी बीमार न करें? वह मेरी बात मान जायेंगे न?''

उसे अपने पास खींच कर और उसके सिर पर हाथ फेरते हुए मैं बोलीह्वह्व''और यह भी माँगना कि संसार में कोई भी प्राणी बीमार न पड़े। जा, अब तू नीलमणि को सुला कर आ।''

जब तक किसलय लौट कर नहीं आया, तब तक मैं भगवान् से प्रार्थना करती रहीह्वह्व''भगवान्, यह अनमोल रतन तुमने मेरी झोली में डाल दिया है। इसकी रक्षा करना।'' *(क्रमशः)*

शरीर तथा मानव-जन्म

शरीर अनेकानेक विपत्तियों का मूल है। यह मलिनताओं से पूर्ण है। यह अनादार, अपमान, दुःख आदि का कारण है। यह फेन, बुद्बुद या मृगतृष्णा के सदृश है। प्राणों के प्रयाण कर जाने पर यह शरीर काष्ठवत् पड़ा रहता है।

क्षुद्र उद्देश्यों की पूर्ति ही इस शरीर का लक्ष्य नहीं है। यह शरीर यहाँ विवेकपूर्ण तपस्या के लिए है तथा परलोक में असीम सुख की प्राप्ति का यह साधन है।

मानव-जीवन का लक्ष्य आत्म-साक्षात्कार है। यह शरीर ब्रह्मज्ञान की प्राप्ति का साधन है। यह संसार-सागर से सन्तरण के लिए नौका है।

धन के द्वारा अमृतत्व प्राप्ति की आशा नहीं की जा सकती। ऐसी ही उपनिषदों की घोषणा है : ''न तो कर्म से, न सन्तान से, न धन से, प्रत्युत् संन्यास से ही मनुष्य अमृतत्व को प्राप्त कर सकता है।''

सभी प्राणियों के लिए मानव-जन्म दुर्लभ है। उसमें भी पुरुष शरीर मिलना और भी कठिन है। यह कहा जाता है कि तीन वस्तुएँ दुर्लभ हैं तथा ईश्वरीय कृपा से ही वे प्राप्त होती हैंह्वह्वमनुष्यत्व, मुमुक्षुत्व (मोक्ष के लिए ज्वलन्त कामना) तथा पूर्ण ज्ञानी का पथ-प्रदर्शन।

स्वामी शिवानन्द

समाचार और प्रतिवेदन

मुख्यालय के समाचार

मुख्यालय आश्रम में विद्यार्थियों के लिए 'त्रिदिवसीय व्यक्तित्व-विकास-शिविर'

वर्ष २०१३ सद्गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज की महासमाधि का ५० वाँ वर्ष है। इस पावन अवसर के कार्यक्रम के मंगलाचरण के रूप में मुख्यालय आश्रम में १० से १२ मई २०१३ तक विद्यार्थियों के लिए एक 'त्रिदिवसीय व्यक्तित्व-विकास-शिविर' आयोजित किया गया। ऋषिकेश के विभिन्न २५ विद्यालयों एवं महाविद्यालयों से कुल १३० विद्यार्थी अपने २६ प्राध्यापकों सहित इस शिविर में भाग लेने के लिए आये। शिविर का आयोजन 'स्वामी शिवानन्द सत्संग भवन (ऑडिटोरियम) में किया गया था।

१० मई को श्री स्वामी अद्वैतानन्द जी महाराज ने दीप-प्रज्वलन द्वारा शिविर का उद्घाटन करते हुए विद्यार्थियों को आशीर्वचन दिये। शिविर की गतिविधियाँ पूर्णतया विद्यार्थियों में नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों के विकास तथा उनके व्यक्तित्व के सर्वतोमुखी विकसन को दृष्टि में रख कर आयोजित की गयी थीं। शिविर के प्रत्येक दिन दो सत्र होते थे, श्री स्वामी योगवेदान्तानन्द जी महाराज पूर्वाह्न सत्र के मंच-संचालक थे तथा श्री स्वामी अखिलानन्द जी महाराज अपराह्न सत्र का संचालन करते थे।

इन तीनों ही दिनों में पूर्वाह्न सत्र का प्रारम्भ श्री स्वामी धर्मनिष्ठानन्द जी महाराज द्वारा योगासनों के संचालन से होता था। इसके उपरान्त श्री स्वामी रामराज्यम् जी महाराज द्वारा शिक्षाप्रद एवं मनोरंजक कहानियों तथा 'विश्व-प्रार्थना' गायन का सत्र होता था। आगामी दो दिन श्री स्वामी योगवेदान्तानन्द जी महाराज ने आत्म-सुसंस्कृति एवं ध्यान सम्बन्धी निर्देशनों पर प्रवचन दिये। श्री स्वामी रामराज्यम् जी महाराज ने द्वितीय दिन कर्मयोग पर प्रवचन दिया तथा तीनों दिन श्रीमद्भगवद्गीता के उदात्त सत्यों पर प्रवचन दिया। शिविर के तीसरे दिन दिल्ली की सुश्री नीरू अग्रवाल जी द्वारा परम पूज्य गुरुदेव की शिक्षाओं पर आधारित एक वर्ग-पहेली खेलह्न'खजानों की खोज' का संचालन किया गया था, जिसमें विद्यार्थियों ने अत्यन्त उत्साहपूर्वक भाग लिया। प्रो. आई. डी. जोशी, डा. सुनील थपलियाल जी, आचार्य श्री रामकृष्ण पोखरियाल जी तथा श्री रामाश्रय जी के निर्देशन में खेलकूद एवं 'स्टाउटिंग' (बाल-चर) गतिविधियाँ भी पूर्वाह्न सत्र के कार्यक्रमों में से एक थे।

अपराह्न सत्र में प्रतिदिन विद्यार्थियों का कार्यक्रम रहता था जिसमें विद्यार्थियों द्वारा भजन, कहानियाँ, पहेलियाँ और चुटकले इत्यादि प्रस्तुत किये जाते थे। विद्यार्थियों की अन्तर्निहित क्षमताओं की अभिव्यक्ति को दृष्टि में रखते हुए तथा उन्हें प्रोत्साहन देने के उद्देश्य से यह विलक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया था। इसके उपरान्त प्रथम दो दिन श्री स्वामी अखिलानन्द जी महाराज के सद्गुरुदेव के प्रेरणाप्रद जीवन तथा उसकी वैश्व शिक्षाओं पर प्रवचन हुए। प्रश्नोत्तर-सत्र में श्री स्वामी रामराज्यम् जी महाराज ने विद्यार्थियों के प्रश्नों के उत्तर दिये।

विद्यार्थियों को पावन मन्दिरों के दर्शनार्थ आश्रम में घुमाने के लिए भी ले जाया गया। समापन सत्र में परम पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज तथा श्री स्वामी अद्वैतानन्द जी महाराज ने अपनी सम्मान्य उपस्थिति द्वारा विद्यार्थियों को आशीर्वादित किया। प्रमाण-पत्र, ज्ञान-प्रसाद एवं पावन प्रसाद वितरण सहित कार्यक्रम समाप्त हुआ। सद्गुरुदेव की पावन सन्निधि में आयोजित इस शिविर में सम्मिलित हो कर सभी भागीदारों ने अपने को अत्यन्त लाभान्वित एवं आशीर्वादित अनुभव किया।

परम पिता परमात्मा तथा सद्गुरुदेव के आशीर्वाद सभी पर हों! * * *

परम पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज की सांस्कृतिक यात्रा

श्री शुकब्रह्मा आश्रम श्री कालहस्ती, चित्तूर, आन्ध्र प्रदेश के पीठाधिपति, श्री स्वामी विद्यास्वरूपानन्द जी महाराज के प्रेमपूर्ण आमन्त्रण पर, परम पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज २७ अप्रैल से २ मई २०१३ तक, पूज्य श्री श्री श्री स्वामी विद्याप्रकाशानन्द गिरी स्वामी जी महाराज के जन्म शताब्दी महोत्सव में सम्मिलित होने के लिए गये।

पूज्य श्री श्री श्री विद्याप्रकाशानन्द गिरी स्वामी जी महाराज श्रीमद्भगवद्गीता के श्रेष्ठ भाष्यकार थे तथा उन्होंने अपना समस्त जीवन इस पावन ग्रन्थ की उदात्त शिक्षाओं को प्रचारित करने में लगा दिया। उन्होंने ही श्रीमद्भगवद्गीता की 'गीतामकरन्द' शीर्षक से अत्यन्त सुविस्तृत टीका भी लिखी थी। उनकी जन्म शताब्दी के उपलक्ष्य में श्री शुक्रब्रह्मा आश्रम ने श्रीमद्भगवद्गीता पर एक राष्ट्रीय स्तर पर विचारगोष्ठी (नेशनल सेमीनार) आयोजित किया था जिसमें भारत की विभिन्न संस्थाओं से आध्यात्मिक प्रकाण्ड विद्वान् आमन्त्रित किये गये थे।

परम पूज्य श्री स्वामी जी महाराज ने सेमिनार में भाग लेते हुए सद्गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज का, 'कर्मयोग के विशिष्ट सन्दर्भ सहित समन्वययोग' विषय पर प्रवचन दिया। साथ ही उन्होंने पूज्य श्री श्री श्री विद्याप्रकाशानन्द गिरी स्वामी जी महाराज के शताब्दी स्मृति ग्रन्थ का उन्मोचन भी किया।

'दी टिहरी हाइड्रो डेवेलपमेंट कार्पोरेशन इन्डिया लिमिटेड' (टिहरी जल विकास निगम भारत) अपने पदाधिकारियों के लिए 'ससटेनेबल लाइवली हुड एण्ड कॉम्युनिटी डेवेलपमैंट सेन्टर, आम बाग, पशुलोक, ऋषिकेश' में नियमित रूप से मैनेजमेंट कोर्स आयोजित किया करती है। टी.एच.डी.सी. ने ऐसे ही एक संक्षिप्त कोर्स में भाग लेने के लिए आये हुए प्रशिक्षु-पदाधिकारियों को सम्बोधित करने के लिए श्री स्वामी जी को २२ मई २०१३ को आमन्त्रित किया। श्री स्वामी जी तदनुसार वहाँ गये और 'मैनेजेरियल इफैक्टिवनैस-सबजैक्टिव प्रैपरेशन' विषय पर प्रवचन दिया। इस प्रवचन को प्रशिक्षु-पदाधिकारियों तथा संस्था के प्राध्यापकों ने सुना और भलीभाँति ग्रहण किया। □ □ □

मुख्यालय आश्रम में आदि शंकराचार्य जयन्ती उत्सव

मनोबुद्ध्यहंकारचित्तानि नाहं,
न च श्रोत्रजिह्वे न च घ्राणनेत्रे ।
न च व्योम भूमिर्न तेजो न वायु–
श्चिदानन्दरूपः शिवोऽहं शिवोऽहम् ।।

''मैं न तो यह मन हूँ, न बुद्धि हूँ, ना ही अहंकार हूँ, ना ही मैं चित्त हूँ; मैं श्रोत्र-इन्द्रिय नहीं हूँ; न मैं स्वादेन्द्री हूँ, ना ही सूँघने अथवा देखने की इन्द्रिय हूँ; न मैं आकाश हूँ, न भूमि हूँ और ना ही अग्नि अथवा वायु हूँ; मैं तो सत् चित् आनन्द स्वरूप परब्रह्म हूँ, मैं शिव हूँ, मैं शिव हूँ।''

इस प्रकार आदिगुरु श्री शंकराचार्य जी ने परम सत्य की उद्घोषणा की। उनके इस धरा पर अवतरित होने के पावन दिवस को मुख्यालय आश्रम में १५ मई २०१३ को अत्यन्त श्रद्धा-भक्ति सहित मनाया गया।

इस शुभ दिन के उपलक्ष्य में श्री विश्वनाथ मन्दिर में संस्थापित भगवान् आदि शंकराचार्य जी के संगमरमर के विग्रह को विविध प्रकार के पुष्पों से सुसज्जित किया गया था। कार्यक्रम का शुभारम्भ आदिगुरु शंकराचार्य जी की दिव्य सन्निधि में परम पावन श्री स्वामी विमलानन्द जी महाराज ने

जय गणेश प्रार्थना एवं संकीर्तन से किया। तदुपरान्त परम पूज्य श्री स्वामी अद्वैतानन्द जी महाराज ने अपने प्रवचन द्वारा सत्य सनातन वैदिक धर्म की पुनर्स्थापना में आचार्य शंकर का योगदान बताते हुए 'साधना पंचकम्' के प्रथम दो श्लोकों की विस्तृत व्याख्या की। परम पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज ने पूर्वाह्न सत्र में तथा सायंकालीन सत्संग में अपने प्रवचन में अद्वैताचार्य के दिव्य व्यक्तित्व के भक्तिभाव के पक्ष पर प्रकाश डालते हुए जगद्गुरु द्वारा रचित 'षट्पदीस्तोत्रम्' के आधार पर शरणागति के वास्तविक अर्थों का अत्यन्त सुन्दर एवं विस्तृत वर्णन किया। उसके उपरान्त अष्टोत्तरशतनामावली सहित पुष्पार्चना आदिगुरु को समर्पित की गयी। आरती एवं पावन प्रसाद वितरण सहित कार्यक्रम ११ बजे समाप्त हुआ। सायंकालीन सत्संग में दो पुस्तकों तथा सद्गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज की १२५ वीं जयन्ती महोत्सव से सम्बन्धित डीवीडी का इस शुभ अवसर पर विमोचन किया गया।

श्री आदि शंकराचार्य भगवान् तथा सद्गुरुदेव के आशीर्वाद हम सभी पर हों जिससे कि हम अपने वास्तविक दिव्य स्वरूप को जान सकें!

'शिवानन्द होम' द्वारा सेवा

श्री गुरुदेव के गहन आशीर्वाद तथा श्री स्वामी जी महाराज की अनन्त कृपा से दिव्य जीवन संघ मुख्यालय, अपने ही एक अंग, लक्ष्मणझूला के निकट तपोवन में स्थित 'शिवानन्द होम' के माध्यम से, उन आवास विहीन लोगों को चिकित्सीय सुविधा उपलब्ध करवाने की विनीत सेवा में सतत संलग्न है, जो रोगग्रस्त हो जाते हैं तथा जिन्हें भरती हो कर चिकित्सा करवाने की आवश्यकता होती है।

उस प्रौढ़ माता के लिए प्रार्थना करते हैं, जो पिछले नौ वर्षों से भी अधिक समय से 'शिवानन्द होम' में भरती है। जब उसे सड़क से लाया गया था, उस समय उसकी स्मरण-शक्ति काम नहीं कर रही थी और वह मानसिक रूप से असन्तुलित, भ्रान्त और घबराहटपूर्ण स्थिति में थी। शिर के ऊपर, बिलकुल बीचोंबीच उसके संक्रमित घाव था जिसमें कीड़े चल रहे थे। मरहमपट्टी करने के समय वह इतनी घबराहट और भय मिश्रित शक्ति से भर जाती थी कि उसे तीन लोगों को पकड़ना पड़ता था और शिर पर पट्टी ठीक जगह रख पाना बहुत ही कठिन हो जाता था। वह रक्ताल्पता से भी ग्रस्त थी। किन्तु फिर भी धीरे-धीरे उसका घाव ठीक हो गया और बाद में जाँच करवाने पर पता चला कि वह तपेदिक, मधुमेह और आतशक रोग से भी ग्रस्त थी। इन पिछले वर्षों में उसकी स्थिति में आश्चर्यजक रूप से सुधार हुआ है और उसने 'शिवानन्द होम' में अपनी एक विशेष जगह बना ली है, जहाँ उसके सब जाने-पहचाने हैं। कई अन्तेवासियों के उसे नाम भी याद हैं। पिछले कुछ एक सप्ताह से उसकी हालत ठीक नहीं चल रही और उसे ग्लूकोज़ लगाया हुआ है। उसे यह समझ में आना कठिन हो रहा है कि इस अन्तःशिरा औषधि देने की क्या आवश्यकता है। उसका भोजन नाम मात्र का ही रह गया है और निर्जलित स्थिति आ पहुँची थी, दुर्बलता अत्यधिक है। उस के शारीरिक और मानसिक कष्ट से आराम के लिए प्रार्थना कर रहे हैं। ॐ श्री राम जय राम जय जय राम।

एक दूसरी महिला रोगी जो इसी माह ही यहाँ प्रभु-शरण में आयी है, आयु में बहुत कम, मात्र ३० वर्ष की होगी। वह सड़क किनारे जीवन से संघर्ष कर रही थी, धरती पर पैर रख कर खड़ी हो पाने में भी कठिनाई लग रही हो मानो! अपनी १० वर्षीय पुत्री के साथ वह अत्यन्त कष्टपूर्ण अवस्था में, उस घर को छोड़ कर निकल पड़ी थी जब वहाँ से मिलने वाले कष्टों और प्रतारणाओं को और अधिक झेल नहीं पायी थी। शारीरिक रूप में अस्वस्थ, केवल सड़कों पर दिन-रात काटते हुए, गुर्दे भी सही ढंग से कार्य करने में असमर्थ तथा साथ ही थायराइड भी बहुत कम काम करने की क्षमता वाला। किन्तु निरन्तर शैया पर ही आराम करने से, तथा सही औषधि नियमित रूप से मिलने से भगवान् की कृपा से उसकी स्थिति में सुधार होने लगा है। ॐ श्री राम जय राम जय जय राम।

''हम सब नाम-रूपों में तुम्हारा दर्शन करें। तुम्हारी अर्चना के ही रूप में इन नाम-रूपों की सेवा करें। सदा तुम्हारा ही स्मरण करें। सदा तुम्हारी ही महिमा का गान करें। तुम्हारा ही कलिकल्मषहारी नाम हमारे अधर-पुट पर हो। सदा हम तुममें ही निवास करें।''

स्वामी शिवानन्द

दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर यूनिवर्सिटी, गोरखपुर में 'श्री स्वामी शिवानन्द मेमोरियल' छात्रवृत्ति प्रदान कार्यक्रम

दिव्य जीवन संघ मुख्यालय आश्रम द्वारा गोरखपुर में दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय में श्री सद्गुरुदेव के पावन नाम में आठ स्नातकोत्तर विषयों के कुल १६ मेधावी छात्रों को छात्रवृत्ति देने के लिए 'स्थाई निधि' संस्थापित की है।

दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय ने श्री स्वामी शिवानन्द मेमोरियल स्कालरशिप वितरणार्थ एक कार्यक्रम १ मई २०१३ को आयोजित किया था; क्योंकि १ मई इस उच्चतर शिक्षा की गौरवशाली संस्था का स्थापना दिवस है। वायस चांसलर प्रो. पी. सी. त्रिवेदी के सादर निमन्त्रण पर मुख्यालय आश्रम के प्रतिनिधि के रूप में श्री स्वामी रामराज्यम् जी महाराज इस कार्यक्रम में सम्मिलित होने के लिए गये। श्री स्वामी जी ने 'ह्यूमन ऐक्सीलेंस फॉर सोशल हारमनी' विषय पर वक्तव्य भी दिया। आगामी दिन श्री स्वामी जी ने एम. बी. ए. तथा बी. बी. ए. के सामूहिक ग्रुप में विद्यार्थियों को 'स्पिरचुएलिटी ऐज़ एन एन्टीडोट टू स्ट्रैस' विषय पर वक्तव्य दिया।

आराधना के अवसर पर विशेष छूट

१ जुलाई २०१३ से ३० सितम्बर २०१३ तक

पुस्तकों पर छूट

३०० रु. तक की पुस्तकों के आर्डर पर २०%

१००० रु. तक की पुस्तकों के आर्डर पर ३०%

१००० रु. से अधिक की पुस्तकों के आर्डर पर ३५%

पूज्य गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी और पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी की निम्नांकित चित्रात्मक पुस्तकों पर ४०% विशेष छूट दी जायेगी।

(चित्रात्मक पुस्तकों पर यह छूट ३० सितम्बर या जब तक पुस्तकें उपलब्ध हैं, तब तक दी जायेगी।)

1. ES8	Glorious Vision	(A Pictorial Volume)	Rs. 650/-
2. ES4	Gurudev Sivananda	(A Pictorial Volume)	Rs. 250/-
3. EC70	Ultimate Journey	(A Pictorial Volume)	Rs. 500/-
4. EC71	Divine Vision	(A Pictorial Volume)	Rs. 300/-

सभी आर्डरों के साथ ५०% अग्रिम धन-राशि भेजें। यह विशेष छूट केवल भारत में ही भेजने के लिए उपलब्ध है।

ह्लह्लह्ल ० ह्लह्लह्ल

द डिवाइन लाइफ सोसायटी, द शिवानन्द पब्लिकेशन लीग

पोस्ट : शिवानन्दनगरह्लह्ल२४९ १९२, जिला : टिहरी-गढ़वाल, उत्तराखंड, भारत

फोन : (९१)०१३५-२४३४७८०, २४३००४०; E-mail: bookstore@sivanandaonline.org

For Catalogue and online purchase logon: www.dlsbooks.org

पावन स्मृति में

भारी क्षति एवं गहन दुःखपूर्ण हृदय से हम सद्गुरुदेव के उत्कट भक्त तथा दिव्य जीवन संघ, बाटु केव्ज़ आश्रम, मलेशिया के अध्यक्ष **परम पूज्य श्री स्वामी गुहभक्तानन्द जी महाराज** के, २ मई २०१३ को हुए निधन की सूचना दे रहे हैं।

श्री पद्मनाथन राजरत्नम, जैसा कि वह पूर्वाश्रम नाम से जाने जाते थे, श्री एन. राजरत्नम एवं श्रीमती रसम्मां दम्पति के भक्त परिवार की आठ में से तीसरी सन्तान थे। इनका जन्म सेरमबन, मलेशिया में २७ अक्तूबर १९४३ को हुआ। 'किंग जॉर्ज वी स्कूल, सेरमबन' में शिक्षा प्राप्त की तथा एक फुर्तीले एवं उत्साही बालक होने के नाते विद्यालय की विविध गतिविधियों में भाग लेते रहे। माध्यमिक शिक्षा प्राप्त करने के उपरान्त उन्होंने 'रेडियो एण्ड टेलीविज़न, मलेशिया' (आर. टी. एम.) में १९६२ से जोहार बारू में २१ वर्ष तक 'टेक्नीकल एसिस्टेन्ट' के तौर पर और फिर कोलालम्पुर में 'स्पेशल ग्रेड ऑफ़िसर' के तौर पर कार्य किया।

बचपन से ही इनमें धर्म और अध्यात्म की ओर रुचि दिखायी देने लगी थी। विद्यालय काल में ही इन्होंने तमिल, संस्कृत भाषा एवं भजन सीख लिए थे तथा धार्मिक एवं आध्यात्मिक विषयों से सम्बन्धित प्रवचनों में भी सम्मिलित होने लगे थे और इस प्रकार बहुत शीघ्र ही मन्दिर के सभी धार्मिक कृत्यों एवं अनुष्ठानों में पारंगत हो गये। १९७० में दिव्य जीवन संघ के साथ जुड़ने से पहले वे अत्यन्त उत्साहपूर्वक 'हिन्दू युवा संस्था' (हिन्दू यूथऑरगेनाइज़ेशन) तथा श्री दण्डायुधपाणि मन्दिर की गतिविधियों में सम्मिलित होते थे। दिव्य जीवन संघ मलेशिया के संस्थापक परमाराध्य परम पूज्य श्री स्वामी प्रणवानन्द जी महाराज तथा परमाध्यक्ष श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज के निर्देशन में श्री पद्मनाथन जी की वास्तविक एवं गहन आध्यात्मिक यात्रा प्रारम्भ हुई। पहले वह भक्त चैतन्य नाम से नैष्ठिक ब्रह्मचारी दीक्षित हुए। फिर १९८५ की महाशिवरात्रि के पावन दिवस को इन्हें परमाराध्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज द्वारा संन्यास दीक्षा प्रदान करके स्वामी गुहभक्तानन्द सरस्वती नामपट्ट दिया गया। संन्यास के उपरान्त एक वर्ष पर्यन्त वह ऋषिकेश में रहे और ब्रह्मलीन परम पूज्य श्री स्वामी ब्रह्मानन्द जी महाराज के समक्ष बैठ कर शास्त्र-सम्बन्धी ज्ञान प्राप्त किया।

परम पूज्य श्री स्वामी प्रणवानन्द जी महाराज की महासमाधि के पश्चात्, ये दिव्य जीवन संघ मलेशिया के परमाध्यक्ष चुने गये। डी.एल.एस. मुख्यालय के सम्पर्क एवं सहायता के साथ स्वामी जी के नेतृत्व में डी.एल.एस. मलेशिया में पूर्ण परिवर्तन हो गया। डी.एल.एस. मलेशिया शाखा की अध्यक्षता के समय से स्वामी जी ने पुरानी उपशाखाओं को पुनः सक्रिय किया तथा बहुत-सी नयी उपशाखाएँ भी स्थापित कीं। आज मलेशिया में २१ उपशाखाएँ हैं तथा सभी के निजी भवन हैं और बहुत-सी शाखाओं में गुरुदेव के संगमरमर के विग्रह स्थापित किये हुए हैं जिनकी नियमित रूप से पूजा होती है। सद्गुरुदेव के दिव्य जीवन के सन्देश मलेशिया में जन-जन तक पहुँचाने के लिए स्वामी जी ने दिन-रात उत्साहपूर्वक अथक कार्य किया। मलेशिया में दिव्य जीवन लहर को सक्रियता प्रदान करने के उद्देश्य से उन्होंने परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज को अनेकों बार आमन्त्रित किया तथा सभी उपशाखाओं में पूज्य स्वामी जी महाराज के साथ स्वयं जा कर भक्तों को उनके दर्शनों एवं प्रेरक प्रवचनों द्वारा आशीर्वादित करवाया। वह स्वयं भी समय-समय पर मलेशिया की सभी उपशाखाओं में जा कर सदस्यों को अपने प्रवचनों एवं भावपूर्ण कीर्तनों द्वारा प्रेरित और उत्साहित करते रहते थे। उनकी दिव्य जीवन संघ के प्रति अनवरत एवं सुदृढ़ प्रतिबद्धता ने भारी संख्या में भक्तों को डी.एल.एस. के प्रति सेवाएँ समर्पित करने के लिए प्रेरित किया।

उन्होंने दो अनाथालय तथा एक बालविहार बनाया, एक निःशुल्क 'मेडिकल सेन्टर' तथा एक 'कम्प्यूटर स्कूल' स्थापित किया, बहुत से परिवारों को मासिक राशन देने की व्यवस्था की, विद्यालयों और विश्वविद्यालय में युवा शिविर नियमित रूप से आयोजित करते रहे, भजनों एवं योग कोर्सों का आयोजन, दीपावली मनाने, निर्धनों के लिए तथा वृद्धाश्रमों एवं निराश्रितों के गृहों के लिए डाक्टरी सेवा का प्रबन्ध किया। उनके प्रेरणाप्रद नेतृत्व में डी.एल.एस. सभी आध्यात्मिक संस्थाओं में उत्कृष्ट बन गयी। स्वामी जी ने अन्य अनेकों संस्थाओं के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध स्थापित किये, केवल हिन्दू धर्म की संस्थाओं के ही नहीं प्रत्युत् बहुत से अन्य धर्मों की संस्थाओं के साथ भी सम्बन्ध स्थापित किये। अनेक संस्थाओं के वह पैट्रन (संरक्षक) तथा स्पिरचुयल एडवाइज़र (आध्यात्मिक परामर्शदाता) थे। दिव्य जीवन संघ के प्रेम और सेवा के राजदूत के रूप में उन्होंने केन्द्र-बिन्दु बन कर भूमिका निभायी तथा एक आध्यात्मिक सितारा बन गये।

श्री स्वामी गुहभक्तानन्द जी महाराज का सम्पूर्ण जीवन ही अत्यधिक अनुकरणीय था। वह कभी निजी सुख-सुविधाओं के लिए लालायित नहीं हुए। कर्म और भक्ति का तथा सेवा और ध्यान का उनमें अत्यन्त सुखद सम्मिश्रण हो गया था। जीवन में इतनी व्यस्तता और सक्रियता होते हुए भी उन्होंने अपनी निजी साधना में एक दिन के लिए भी ढील नहीं दी थी। वह कार्तिकेय भगवान् के उत्कृष्ट भक्त थे। वह प्रातः ३.३० बजे उठते, घण्टों ध्यान, प्राणायाम तथा अन्य आसनों में व्यतीत करते, नाम-जप तथा मानसिक जप करते थे। वह इस बात का भी ध्यान रखते थे कि डी.एल.एस. मलेशिया के सभी आश्रमवासी गुरुदेव के इस सशक्त सिद्धान्त का अनुसरण करें। वह आश्रमवासियों को सदा स्मरण कराते रहते थे कि वे सब गुरुदेव के दैवी कार्यों के प्रति समर्पित सेवक हैं।

प्रत्येक रंग, जाति और धर्म के लोगों की उन तक सदा सरल एवं सहज पहुँच थी। वह सबके दुःख-दर्द में सहभागी बनते तथा उनके जीवन में सुख एवं शान्ति लाते थे। वह अत्यन्त प्रेमपूर्ण एवं सरल भाषा में बात करते थे जिससे वह अत्यन्त लोकप्रिय हो गये थे। उनकी आन्तरिक शक्ति एवं प्रसन्नता उनके चेहरे से दर्पण के समान सदैव प्रतिबिम्बित होती थी। उनका खराब स्वास्थ्य भी उनकी सेवा करने की आकांक्षा एवं उत्साह को कम नहीं कर पाया; अपने जीवन के अन्तिम श्वासह्न२ मई २०१३ तक, जब उन्होंने गुरुदेव के पावन चरणों में शाश्वत स्थान प्राप्त कर लिया, वे अपने प्रिय सद्गुरुदेव के प्रति सेवाएँ समर्पित करते रहे।

उनकी इच्छानुसार उनकी अस्थियाँ मुख्यालय आश्रम में लायी गयीं तथा १६ मई को माँ गंगा में विसर्जित कर दी गयीं। १७ मई को आश्रम में समुचित श्रद्धा एवं सम्मानपूर्वक उनकी षोडशी सम्पन्न की गयी। इस कार्यक्रम में सद्गुरुदेव की पादुका-पूजा, भगवान् श्री विश्वनाथ की, भगवान् कार्तिकेय की तथा भगवती माँ गंगा जी की विशेष पूजाएँ भी सम्मिलित थीं। ३, १६ एवं १७ मई के सायंकालीन सत्संग परम पूज्य श्री स्वामी गुहभक्तानन्द जी महाराज की पावन स्मृति को समर्पित किये गये, जिनमें आश्रम के सभी वरिष्ठ स्वामी जी, यथाह्नह्नपरम पावन श्री स्वामी विमलानन्द जी महाराज, परम पूज्य श्री स्वामी निर्लिप्तानन्द जी महाराज, परम पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज, परम पूज्य श्री स्वामी अद्वैतानन्द जी महाराज तथा परम पूज्य श्री स्वामी योगवेदान्तानन्द जी महाराज ने श्रद्धांजलियाँ समर्पित कीं। सभी स्वामी जी महाराज ने प्रेमपूर्ण श्रद्धांजलि में ब्रह्मलीन श्री स्वामी गुहभक्तानन्द जी महाराज की सद्गुरुदेव के प्रति अटल भक्ति तथा उनके मिशन के प्रति अनन्य एवं समर्पित सेवाओं पर प्रकाश डाला।

गुरुदेव के पावन कार्यों के प्रति उनकी समर्पित एवं अथक सेवाएँ वास्तव में अतुलनीय हैं। उनका अचानक हुआ निधन मलेशिया दिव्य जीवन लहर की अपूरणीय क्षति है।

परम पिता परमात्मा से प्रार्थना है कि उनकी आत्मा परम पूज्य सद्गुरुदेव के पावन चरणों में शाश्वत निवास प्राप्त करे!

द डिवाइन लाइफ सोसायटी

७३ वें बेसिक योग–वेदान्त कोर्स का समापन समारोह

यज्ज्ञात्वा नेह भूयोऽन्यज्ज्ञातव्यमवशिष्यते।

''जिस (परम सत्य) को जान लेने पर यहाँ जानने वाला कुछ भी शेष नहीं रहता।''

इस परम सत्य में दीक्षित होने के लिए, भारत के विभिन्न भागों से कुल ४० आकांक्षी साधकों ने, मुख्यालय आश्रम में हो रहे ७३ वें योग–वेदान्त बेसिक कोर्स में भाग लिया था जिसका समापन समारोह २९ अप्रैल २०१३ को सम्पन्न हुआ। डी.एल.एस. मुख्यालय के परमाध्यक्ष परम पावन श्री स्वामी विमलानन्द जी महाराज ने अपनी सम्माननीय उपस्थिति द्वारा कार्यक्रम की शोभा–वृद्धि की।

प्रारम्भिक प्रार्थनाओं तथा कोर्स के 'विवरण' की प्रस्तुति के उपरान्त विद्यार्थियों ने कोर्स के सम्बन्ध में अपने अनुभव एवं विचार प्रस्तुत किये। इसके बाद प्रमाण–पत्र एवं ज्ञान–प्रसाद विद्यार्थियों को दिया गया तथा प्राध्यापक वर्ग को सम्मानित किया गया।

परम पावन श्री स्वामी विमलानन्द जी महाराज ने विदाई–सन्देश में, 'जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में परिपूर्ण सफलता प्राप्त करने में समर्पण एवं परिश्रम की भूमिका' पर प्रकाश डाला। श्री स्वामी जी महाराज ने विद्यार्थियों को एकाडेमी में प्राप्त किये गये दिव्य निर्देशों को जीवन में उतारने के लिए प्रेरित किया। माँ सरस्वती की पूजा एवं प्रसाद वितरण सहित कार्यक्रम समाप्त हुआ।

सर्वशक्तिमान् परमात्मा एवं सद्गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज की कृपा–वृष्टि सभी पर हो!

७४ वें बेसिक योग–वेदान्त कोर्स का उद्घाटन कार्यक्रम

''जो शिक्षा आपको अपने वास्तविक स्वरूप का बोध प्राप्त करने की योग्यता प्रदान करती है, वही वास्तविक शिक्षा है।'' (सद्गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज)

इसी 'वास्तविक शिक्षा' को प्रदान करने के पावन उद्देश्य को ले कर 'योग–वेदान्त फारेस्ट एकाडेमी' अपने आरम्भ होने के समयह्वह्व१९४८ से ही, प्रारम्भिक योग–वेदान्त पाठ्यक्रमों का संचालन करती आ रही है। ७४ वाँ बेसिक योग–वेदान्त कोर्स ३ मई २०१३ को वाई.वी.एफ.ए. वाचनालय में दिव्य जीवन संघ मुख्यालय के परमाध्यक्ष परम पावन श्री स्वामी विमलानन्द जी महाराज द्वारा दीप–प्रज्वलन के साथ किया गया। इस विलक्षण एकाडेमी में दिव्य ज्ञान प्राप्त करने के लिए १३ विभिन्न प्रान्तों से कुल २८ विद्यार्थी आये।

विद्यार्थियों के सौभाग्य की सराहना करके उन्हें शुभ आशीर्वचन देते हुए श्री स्वामी जी महाराज ने कहा कि योग–वेदान्त कोर्स में भाग लेने के लिए सद्गुरुदेव के इस पावन स्थल पर आना वास्तव में परमात्मा की कृपा ही है। श्री स्वामी जी ने विद्यार्थियों को, स्वयं को श्रेष्ठ मानव में परिणित करने के लिए हृदयपूर्वक गहन प्रयास करके इस विलक्षण सुअवसर का सदुपयोग करने के लिए प्रेरित भी किया। सर्वशक्तिमान् परमात्मा तथा सद्गुरुदेव की कृपा सब पर हो!

* * *

दिव्य जीवन संघ की शाखाओं के प्रतिवेदन

अम्बाला (हरियाणा): सत्संग एवं निःस्वार्थ सेवा यथा जलसेवा, होमियोपैथी चिकित्सा एवं निःशुल्क औषधि वितरणह्लह्लनिर्धनों और जरूरतमन्दों के लिएह्लसतत चलते रहे। विशेष गतिविधियाँह्लह्ल१९ अप्रैल को शाखा द्वारा श्री राम नवमी उत्सव मनाया गया जो प्रसाद वितरण के उपरान्त समाप्त हुआ।

आस्का (ओडिशा): शाखा द्वारा प्रत्येक मास में दो बारह्लह्लगुरुवार एवं रविवार को सत्संग नियमित रूप से चलते रहे। विशेष गतिविधियाँह्लह्लशाखा द्वारा बवनपुर शाखा में २१ अप्रैल को साधना शिविर का पूरे दिन-भर का कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें लगभग ३५० भक्त सम्मिलित हुए। यह प्रसाद वितरण के उपरान्त समाप्त हुआ।

बढ़िआउस्ता (ओडिशा): शाखा ने नितिशपुर सत्संग केन्द्र में गाँववासियों तथा १४ शाखाओं के १४ सदस्यों के साथ एक-दिवसीय साधना शिविर का आयोजन, १२० स्कूल-विद्यार्थियों को योगासन प्रशिक्षण, दो संन्यासियों द्वारा दिव्य जीवन के उद्देश्यों एवं शिक्षाओं पर प्रवचन हुए, प्रसाद वितरण सहित कार्यक्रम समाप्त हुआ।

बालेश्वर (ओडिशा): शाखा द्वारा दैनिक पादुका-पूजा, महामन्त्र जप, आरती तथा प्रत्येक गुरुवार को भक्तों के निवास पर सायंकालीन सत्संग यथावत् चलते रहे।

बाँसवाड़ा (राजस्थान): शाखा की स्थापना १२ जून १९७१ को/८ सितम्बर २०१२ को गुरुदेव की जयन्ती धूमधाम से, गुरुदेव के चित्र की पूजा, प्रवचन, भजन-कीर्तन, २० आध्यात्मिक नियमों का वितरण; गीता जयन्ती को सदस्यों द्वारा सम्पूर्ण गीता पाठ तथा गीतासार पत्रक वितरण; प्रत्येक रविवार को सत्संग; दिव्य जीवन संघ की पत्रिकाओं तथा धार्मिक पुस्तकों का वितरण शिवरात्रि १५-३-२०१३ को मेले में किया गया।

बीकानेर (राजस्थान): मास मार्च-अप्रैल में नियमित गतिविधियाँ यथाह्लह्लदैनिक सत्संग, मृत्युंजयेश्वर मन्दिर में दिन में २ बार पूजा, अर्चना, प्रदोष के दिन सायंकाल की विशेष पूजा, इत्यादि नियमित रूप से चलती रही, विशेष कार्यक्रमों मेंह्लह्ल१०-३-१३ को महाशिवरात्रि महोत्सव में पुष्प सज्जा, शृंगार, पंचाक्षरी मन्त्र संकीर्तन एवं स्तुति गान; ११ मार्च को सोमवती अमावस्या के दिन अन्ध विद्यालय में फल, मिठाई इत्यादि वितरण, होली के दिन फाग उत्सव का आयोजन, माह के द्वितीय मंगलवार को एवं अन्तिम शनिवार को सुन्दरकाण्ड, हनुमान चालीसा पाठ; ११-४-१३ से १९-४-१३ तक वसन्त नवरात्रि में नवाह्न पारायण का सस्वर पाठ, नवमी को बाल श्री राम का विशेष शृंगार एवं अर्चन तथा आरती; माँ दुर्गा के विग्रह के समक्ष अखण्ड दीप प्रज्वलन, नवमी को कन्यापूजन; २५-४-१३ चैत्र पूर्णिमा हनुमान जयन्ती को सुन्दरकाण्ड पाठ, हनुमान चालीसा पाठ, भजन कीर्तन, हनुमान प्रतिमा का विशेष शृंगार, पूजा, अर्चना एवं आरती। चिदानन्द शिक्षा सहायक निधि द्वारा निर्धन मेधावी छात्रों को छात्रवृत्ति तथा शिवानन्द पुस्तकालय के माध्यम से आध्यात्मिक ज्ञान प्रचार यथावत् चलता रहा।

बैंगलूरु (कर्नाटक): शाखा द्वारा नियमित सत्संगह्लह्लपादुका पूजा, गुरुदेव के साहित्य में से स्वाध्याय, शिवानन्द अष्टोत्तरशतनाम, ललितासहस्रनाम, विष्णुसहस्रनाम, देवी माहात्म्य सहित तथा योगासन कक्षाएँ विधिवत् चलते रहे। विशेष कार्यक्रमह्लह्ल१२ से १९ अप्रैल तक वसन्त नवरात्रि के उपलक्ष्य में रामायण पाठ किया गया।

बेलारी (कर्नाटक): शाखा द्वारा दैनिक पूजा तथा प्रत्येक रविवार को साप्ताहिक सत्संग नियमित रूप से किया जाता रहा। २५ अप्रैल को परम पूज्य श्री स्वामी कृष्णानन्द जी महाराज के जन्मदिवस पर विशेष पूजा एवं अर्चना विशिष्ट गतिविधि रही।

भंजनगर (ओडिशा): शाखा की नियमित गतिविधियाँह्लह्लदैनिक पादुका पूजा, एकादशी एवं संक्रान्ति दिनों को साप्ताहिक सत्संग; तथा विशेष गतिविधियाँह्लह्ल२७ फरवरी से १७ मार्च तक एक संन्यासी द्वारा भगवद्गीता एवं विवेकचूड़ामणि पर प्रवचन, १४ से १९ अप्रैल तक श्री राम चरित मानस पारायण तथा ३७१ वाँ मासिक साधना दिवस ३५० भक्तों सहित मनाया गया।

भिलाई, शान्तिपरा (छत्तीसगढ़): दैनिक गतिविधियाँ, फरवरी मार्च मास की, डेढ़ घण्टे का गीता पाठ तथा साप्ताहिक सत्संग प्रत्येक रविवार यथावत् चलता रहा। फरवरी में श्री स्वामी धर्मनिष्ठानन्द जी महाराज का ६-२-१३ को आगमन, उनके साथ नन्दिनी के ठाकुर महाराज तथा दो अन्य स्वामी जी भी आये एक घण्टे प्रवचनह्लह्लध्यान एवं योग के विषय मेंह्लह्लजिसमें १०० से अधिक भक्त सम्मिलित हुए। १०-३-१३ महाशिवरात्रि को विशेष कार्यक्रम जिसमें प्रभातफेरी, सम्पूर्ण गीता पाठ, सायंकालीन सत्संग में ७ बजे से १.३० बजे तक जिसमें भजन, कीर्तन, जागरण भी किया गया। दिन-भर भजन-कीर्तन तथा बाद में प्रसाद वितरण भी हुआ।

भुज (गुजरात): शाखा द्वारा हर तीसरे शनिवार को सत्संग; १३ अप्रैल को महिला मण्डल भील समाज द्वारा शाखा में ग्रामीण संस्कृति के भजनों की प्रस्तुति; २४ अप्रैल को परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज के 'दश अवताराज ऑफ़ लार्ड विष्णु' (भगवान् विष्णु के दशावतार) के अनुवाद की, शाखा अध्यक्ष द्वारा प्रस्तुति; सद्गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज की जन्मतिथि ८ अप्रैल को विद्यार्थियों द्वारा सामूहिक प्रार्थना गान किया गया।

बिलासपुर (छत्तीसगढ़): शाखा द्वारा नियमित सत्संग, चल सत्संग तथा बाल सत्संग चलते रहे तथा ८ मार्च को बहुत से भक्तों की उपस्थिति में पादुका पूजा की गयी।

छत्रपुर (ओडिशा): शाखा द्वारा साप्ताहिक सत्संग यथावत् चलते रहे। साधना दिवस तथा सद्गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज एवं परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी की जन्मतिथियों ८ एवं २४ अप्रैल को पादुका पूजाएँ की गयीं। विशेष गतिविधियाँह्लह्ल१८ से २६ अप्रैल को श्री रामनवमी के शुभ अवसर पर श्री रामचरित मानस नवाह्ल पारायण तथा १४ अप्रैल मेष संक्रान्ति को सुन्दरकाण्ड पारायण किया गया।

दिगपहंडी (ओडिशा): शाखा द्वारा जो बार दैनिक पूजा, प्रत्येक गुरुवार और रविवार को सायंकालीन सत्संग, शिवानन्द दिवस तथा चिदानन्द दिवस पर श्री गुरु पादुका पूजा एवं विशेष सत्संग संक्रान्ति दिवस को; १२ फरवरी को विश्व-शान्ति हेतु प्रातः हवन तथा संध्या समय सत्संग किया गया।

हिंजीलिकट (ओडिशा): नियमित सत्संग विधिवत् चलते रहे; १० मार्च को महाशिवरात्रि पूजा, अभिषेक, अर्चना, पंचाक्षरी मन्त्र जप तथा प्रसाद वितरण सहित मनायी गयी।

जयपुर (ओडिशा): दो बार दैनिक पूजा; प्रत्येक रविवार एवं गुरुवार को सत्संग; ८ मार्च को शिवानन्द दिवस; १० मार्च को पारम्परिक विधि से भगवान् शिव के पूजन सहित शिवरात्रि; २८ मार्च को चल सत्संग, तथा कोरापुट जिला धर्मार्थ होमियो चिकित्सालय द्वारा ९४५ रोगियों की चिकित्सा की गयी।

जयपुर, राजा पार्क (राजस्थान): शाखा द्वारा मास मार्च-अप्रैल की दैनिक प्रातः एवं सायंकालीन सत्संग-पूजा इत्यादि गतिविधियाँ यथावत् चलती रहीं साप्ताहिक कार्यक्रमों में वृहस्पतिवार महामृत्युंजय मन्त्र जप, शनिवार सुन्दरकाण्ड एवं हनुमान चालीसा तथा रविवार को प्रार्थना, स्तोत्र-पाठ, जप, हवन, गीता-पाठ नियमित रूप से चलता रहा। मातृ सत्संग प्रत्येक सोमवार को यथावत्, विशेष कार्यक्रमों के अन्तर्गत मार्च माह में महाशिवरात्रि १०-३-१३ को जिसमें सिद्धेश्वर महादेव तथा अष्टधातु शिवलिंग की पूजा, अर्चना, अभिषेक, शृंगार, कीर्तन, आरती एवं प्रसाद वितरण इत्यादि

कार्यक्रम; अर्धरात्रि में भक्तों को गर्म दूध पान; २६-३-१३ को होलिका दहन कार्यक्रम तथा ३१-३-१३ को होली स्नेह मिलन उत्सव धूमधाम से; मासिक कार्यक्रमह्वह्व२७ निर्धन विधवाओं को तथा एक मन्दबुद्धि को आर्थिक सहायता में कुल ४०५० रुपये का वितरण, गरीबदास कुष्ठरोग आश्रम में ७० किलो चावल, २० किलो दाल, १५ किलो चीनी, २ किलो सरसों का तेल, १ किलो चाय पत्ती आदि राशन वितरित किया गया; स्वामी शिवानन्द पुस्तकालय द्वारा सेवा एवं स्वामी शिवानन्द होमियोपैथी औषधालय द्वारा १५३५ एवं १४५० रोगियों की निःशुल्क सेवा की गयी। नारायण सेवा तथा जल सेवा भी सतत चलती रही।

कबिसूर्यनगर (ओडिशा): शाखा द्वारा नियमित रूप से दैनिक पूजा तथा 'स्वामी चिदानन्द अन्नदान एवं असहाय कल्याण प्रकल्प' के माध्यम से की जाने वाली नारायण सेवा के अतिरिक्त १० मार्च महाशिवरात्रि को अखण्ड नाम जप तथा २९ मार्च से ४ अप्रैल तक श्रीमद्‌भागवत प्रवचन का आयोजन किया गया।

कानपुर (उत्तर प्रदेश): शाखा की नियमित गतिविधियाँ यथावत् चलती रहीं। ७ मई, श्री स्वामी प्रेमानन्द जी महाराज के जन्म दिन के उपलक्ष्य में श्रीमद् रामायण, श्रीमद्‌भगवद्‌गीता का पारायण तथा पादुका पूजाह्वह्वविशेष गतिविधि रही।

कंटाबांझी (ओडिशा): शाखा द्वारा प्रत्येक रविवार को सत्संग जिसमें ॐ का जप, गीता पाठ तथा गीता के श्लोकों पर प्रत्येक भक्त द्वारा प्रवचन शान्ति-पाठ के साथ समापन किया जाता रहा।

खातिगुडा (ओडिशा): साधना दिवस, नारायण सेवा, महामन्त्र कीर्तन, एकादशी को विष्णुसहस्रनाम पारायण तथा भक्तों के गृहों में चल सत्संग शाखा द्वारा नियमित रूप से किये जाते रहे।

लखीमपुरखेरी (उत्तर प्रदेश): शाखा द्वारा प्रत्येक सोमवार सत्संग; शाखा की रजत जयन्ती के उपलक्ष्य में १४ से १६ अप्रैल तक पूज्य श्री स्वामी धर्मनिष्ठानन्द जी महाराज को आमन्त्रण तथा विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन, तदनुसार स्वामी जी द्वारा सत्संग, 'ध्यानह्वह्वईश्वर-साक्षात्कार का साधन' विषय पर प्रवचन, कीर्तन तथा शाखा सदस्यों के गृहों पर सत्संग हुए।

लांजीपल्ली, ब्रह्मपुर (ओडिशा): शाखा द्वारा भजन, कीर्तन, स्वाध्याय एवं पूजा सहित सत्संग यथावत् चलते रहे। विशेष गतिविधियाँह्वह्व१३० निर्धनों एवं जरूरतमन्दों को सात्त्विक भोजन तथा स्टील के कटोरे दिये गये। मार्च मास में विभिन्न स्थानों के संन्यासियों द्वारा प्रवचनों का आयोजन किया गया। महाशिवरात्रि १० मार्च को मनायी गयी, लगभग १७० निर्धन जरूरतमन्दों को भोजन एवं छाते वितरित किये गये, १४ अप्रैल को विशेष सत्संग, आश्रम के सामने पेयजल की व्यवस्था की गयी, निर्धनों को भोजन एवं गायों को चारा देना भी कार्यक्रम का एक अंग रहा तथा १२० निर्धनों को भोजन, स्टील के कटोरे तथा गिलास दिये गये।

लखनऊ (उत्तर प्रदेश): शाखा द्वारा ६ से १२ अप्रैल २०१३ तक एक योग शिविर का आयोजन किया गया, जिसका संचालन मुख्यालय आश्रम के श्री स्वामी धर्मनिष्ठानन्द जी ने किया, इसमें लगभग ४० भागीदार थे जिन्हें प्रमाण-पत्र दिये गये। स्वामी जी ने विभिन्न विषयों पर प्रवचन दिये। एक कार्यक्रम अन्ध विद्यालय में भी रखा गया था, वहाँ विद्यार्थियों द्वारा भजन सुनने के उपरान्त श्री स्वामी जी ने उन्हें निर्देशन दिये तथा नारायण सेवा के रूप में प्रसाद वितरित किया।

माधवपत्तनम् (आन्ध्र प्रदेश): नियमित सत्संग प्रत्येक बुधवार एवं रविवार को चलते रहे, निःशुल्क चिकित्सा शिविर तथा नारायण सेवा भी यथावत् चलती रही। विशेष गतिविधियाँह्वह्वश्री रामनवमी १९ अप्रैल को 'कल्याण महोत्सव', 'महाप्रसाद वितरण' तथा ऋषिकेश आश्रम के

सुब्बाराव जी द्वारा २४ अप्रैल को उनके आगमन पर, उनके द्वारा 'विवेक और वैराग्य' विषय पर प्रवचन।

पटियाला (पंजाब): शाखा द्वारा भक्तों के निवास स्थानों पर नियमित रूप से चल सत्संग होते हैं जिनमें प्रार्थना, भजन-कीर्तन, सद्गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज एवं परम पूज्य चिदानन्द जी महाराज की शिक्षाओं का स्वाध्याय किया जाता है। शाखा द्वारा प्रत्येक मास स्थानीय गोशाला में दान भी दिया जाता है।

फरीदपुर (उत्तर प्रदेश): शाखा द्वारा नियमित गतिविधियाँ एवं सत्संग यथावत्, २ माह से चली आ रही शीतकालीन सेवा को विश्राम; विशेष कार्यक्रमों में श्री राम चरितमानस का अखण्ड पाठ, हवन, पादुका पूजा, संकीर्तन इत्यादि ब्रह्मलीन श्री स्वामी प्रेमानन्द जी महाराज की आराधना हेतु; फूलों की होली को सत्संग, भजन, कीर्तन एवं फूल होली खेली गयी। दीन-दुःखी जरूरतमन्दों की सेवा चलती रही; वार्षिक बैठक बुलायी गयी जिसमें सभी सदस्यों ने भाग लिया।

राउरकेला (ओडिशा): शाखा द्वारा भक्तों के गृहों में सत्संग नियमित रूप से, ८ और २४ को मासिक सत्संगों में पादुका पूजा, अभिषेक और अर्चना, १० मार्च महाशिवरात्रि को शिवसहस्रनाम यज्ञ १५० भक्तों सहित किया गया। विशेष गतिविधियाँह्वह्व१०८ विद्यार्थियों की सहभागिता से श्रीमद्भगवद्गीता प्रतियोगिता का आयोजन, विजयी छात्रों को नकद पारितोषिक तथा सभी भागीदारों को पेन दिये गये। निर्धन रोगियों की निःशुल्क होमियोपैथी चिकित्सा की गयी।

सालेपुर (ओडिशा): नियमित सत्संग चलते रहे। प्रत्येक रविवार को स्वामी शिवानन्द धर्मार्थ चिकित्सालय के माध्यम से कुल ९३ रोगियों की निःशुल्क चिकित्सा की गयी। विद्यालयों/महाविद्यालयों में योगासन प्रशिक्षण चलता रहा। जिसमें कुल ३५ विद्यार्थियों और अध्यापकों ने भाग लिया। महाशिवरात्रि को ६ घण्टे पंचाक्षरी मन्त्र का अखण्ड जप तथा २४ अप्रैल को अखण्ड महामन्त्र जप, विशेष गतिविधियाँ रहीं।

साउथ बलंडा (ओडिशा): शाखा द्वारा दिन में २ बार पूजा, प्रत्येक शुक्रवार को सत्संग, मास की ८ और २४ को गुरु पादुका पूजा नियमित रूप से; २७ अप्रैल को विश्व-बन्धुत्व एवं विश्व-शान्ति हेतु अखण्ड महामन्त्र संकीर्तन तीन घण्टे के लिए किया गया।

स्टील टाउनशिप, राउरकेला (ओडिशा): भक्तों के गृहों में चल सत्संग तथा 'साधना दिवस' के अतिरिक्त शाखा द्वारा प्रत्येक गुरुवार को गुरु पादुका पूजा; ११ से १८ अप्रैल तक दैनिक सायंकालीन सत्संग तथा श्री रामनवमी उत्सव १९ अप्रैल को मनाया गया जिसमें श्री राम नाम जप, हनुमान चालीसा एवं रामायण पाठ तथा सभी भक्तों को अन्नप्रसाद सेवन से कार्यक्रम समाप्त हुआ।

सुनाबेड़ा (ओडिशा): शाखा द्वारा प्रत्येक रविवार और गुरुवार को सत्संग में भजन, कीर्तन, जप, पूजा एवं स्वाध्याय; १० मार्च महाशिवरात्रि को भगवान् शिव का पूजन तथा पादुका पूजा, अर्चना, आरती इत्यादि किये गये। योगासन कक्षाएँ यथावत् चलती रहीं।

सुनाबेडा महिला शाखा (ओडिशा): शाखा द्वारा दैनिक, साप्ताहिक एवं पाक्षिक सत्संग भजन, कीर्तन, महामृत्युंजय जप, शान्ति पाठ, गीता पाठ, सुन्दरकाण्ड एवं विष्णु सहस्रनाम पारायण, अर्चना और अभिषेक हुआ। प्रत्येक रविवार को बालकों का सत्संग तथा मंगलवार को नारायण सेवा चलती रही। विशेष गतिविधियाँह्वह्वश्री रामनवमी के उपलक्ष्य में शाखा द्वारा ११ से १९ अप्रैल तक श्री हनुमान मन्दिर में रामचरित मानस का पारायण तथा एक प्रवचन आयोजित किया गया।

वाराणसी (उत्तर प्रदेश): शाखा द्वारा वृद्धाश्रम में १४ एवं २८ अप्रैल को सत्संग किया गया जिसमें सर्वदेव वंदना, गुरुस्तोत्र, आदित्यहृदय पाठ, स्वाध्याय, महामृत्युंजय जप,

विश्व-प्रार्थना तथा देवी-स्तुति के उपरान्त आरती और सभी उपस्थित लोगों में प्रसाद वितरण किया गया।

विशाखपत्तनम् (आन्ध्र प्रदेश): शाखा द्वारा प्रत्येक सोमवार को विशेष सत्संग एवं नारायण सेवा, महामृत्युंजय मन्त्र हवन त्रयोदशी की प्रातः, प्रत्येक पूर्णिमा की संध्या को गायत्री हवन; लक्ष्मी एवं गणपति हवन संकटहर चतुर्थी को किये गये। भगवद्गीता कक्षाएँ भी संचालित की गयीं। विशेष गतिविधियाँह्वह्व१० मार्च महाशिवरात्रि को एकादश रुद्राभिषेक में सभी सदस्यों एवं भक्तों ने भाग लिया, एक गायन समारोह, प्रवचन, संकीर्तन तथा आगामी प्रातः तक जागरण भी किया गया।

विदेशी शाखा

हांगकांग (चीन): शाखा द्वारा प्रत्येक शनिवार सायंकाल को चे उंग शा वान तथा नॉर्थ पौइंट योगा सैंटर, दोनों ही शाखाओं में १ घण्टे महामृत्युंजय मन्त्र का जप किया गया। 'प्रैक्टिकल गाइड टू योगा' के आधार पर योगासन कक्षाएँ नियमित रूप से चलती रहीं जिनमें आवश्यक योग व्यायाम, श्वास क्रियाएँ तथा ध्यान भी किया जाता था।

केवल भगवान् का ही चिन्तन

आप सबके लिए मनन करने का आवश्यक तत्त्व यह है कि समय भागता जा रहा है। दिवस सप्ताह में बदल रहे हैं, सप्ताह महीनों में, महीने वर्षों में। एक-एक दिन करके हमारी जीवन-अवधि घटती जा रही है; विभिन्न विकर्षण हमारे मन को लक्ष्य से दूर ले जाते हैं। आप कैसे यह अपेक्षा रखते हैं कि आपका जीवन ईश्वर-साक्षात्कार से अभिषिक्त होगा? प्रबोधन से, मोक्ष से, आनन्द से, शान्ति से और परिपूर्णता से अलंकृत होगा? कैसे यह आशा रखते हैं?

यह केवल तभी सम्भव है जब व्यक्ति निरन्तर भगवान् का, केवल भगवान् का ही चिन्तन करता है, जब व्यक्ति भगवान् के अतिरिक्त अन्य सब विचारों को छोड़ कर केवल भगवान् का ही चिन्तन करता है। ऐसे व्यक्ति के लिए हम लगभग कह सकते हैं कि यदि भगवान् का अनुग्रह भी है तो, ईश्वरानुभति की प्राप्ति इसी जन्म में, बल्कि अभी और यहीं निश्चित है।

जो व्यक्ति अपना मन, अपनी अन्तर्दृष्टि निरन्तर अबाध रूप से भगवान् और केवल भगवान् पर दृढ़तापूर्वक स्थिर रखता है, जो अन्य किसी भी विचार को अपने मन में प्रविष्ट नहीं होने देता, जो पूर्णतया ईश्वर में स्थित है, शत-प्रति-शत, किसी भी अन्य विचार को हस्तक्षेप नहीं करने देताह्वह्वऐसे व्यक्ति का अन्तःकरण स्वयं भगवान् ही हो जाता है; क्योंकि ऐसे व्यक्ति में भगवान् निवास करते हैं, वे उसके अन्तर्मन को, उसकी चेतना को पूर्णतया भर देते हैं और वह ईश्वरीय चेतना की स्थिति में पहुँच जाता हैह्वह्वतब वह मानवीय चेतना में नहीं रहता।

ऐसी स्थिति के लिए हमें प्रार्थना करनी चाहिए। इसके लिए हमें विनम्रता सहित, बिना अहंकार के अथक प्रयत्न करना चाहिएह्वह्वयह जानते हुए कि यह प्रयत्न भी उन्हीं के द्वारा प्रेरित है, उन्हीं की कृपा की शक्ति से हो रहा हैह्वह्वयहाँ मैं कुछ भी नहीं हूँ, केवल एक वही सब-कुछ है। हम उस सर्वशक्तिमान् से, उस सर्वातीत सत्ता से प्रार्थना करते हैं, हम परम पावन गुरुदेव से प्रार्थना करते हैं कि वे यह आशीर्वाद और वरदान कृपापूर्वक आपमें से प्रत्येक को प्रदान करें! ऐसा ही हो! **स्वामी चिदानन्द**

फिलिंग मैटर

कर्म–बन्धन की समाप्ति

जब आप ईश्वर के सम्बन्ध में सोचते हैं, तो आपका शरीर, मन और अन्तस्तल रोमांचित हो उठता है। जब आप उनका नामोच्चारण करते हैं, तो स्नायु–वर्ग शीतल प्रतीत होता है। जब आप उन्हें प्रेम करते हैं, तो आपमें शान्ति और आनन्द अवतरित होते हैं। जब आप उनका साक्षात्कार करते हैं, तो आपके कर्म–बन्धन समाप्त हो जाते हैं।

ह्वह्वस्वामी शिवानन्द

मूर्ति–पूजा

न्यूयार्क के एक प्रख्यात धनी परिवार का एक सदस्य मुझसे मिलने आया था। बात करते–करते उसने कहाह्वह्व''स्वामी जी! मुझे मूर्ति–पूजा में विश्वास नहीं है। वह मूर्खता है।''

उसके साथ उसका निजी सचिव भी था। सचिव के पास उस धनी सज्जन का एक फोटो था। वह फोटो मैंने अपने हाथ में लिया और सचिव से उस पर थूकने को कहा। वह चकित हुआ। उसने बड़े संकोच के साथ अपने स्वामी को देखा। मैंने दुबारा आदेश दियाह्वह्व''चलिए, जल्दी थूकिए।''

सचिव ने कहाह्वह्व''स्वामी जी, ये तो मेरे स्वामी हैं। मैं उनकी सेवा करता हूँ। मैं इस चित्र पर कैसे थूकूँ? यह उनका आकार है। ऐसा नीच कर्म मुझसे न होगा। इस चित्र में मैं उनका आदर करता हूँ।''

मैंने कहाह्वह्व''यह तो मात्र कागज है। यह वास्तविक मनुष्य नहीं है। यह न चल सकता है, न बोल सकता है और न ही खा सकता है।''

तब सचिव ने कहाह्वह्व''कुछ भी हो, मुझे इस चित्र में मेरा स्वामी दीखता है। यह काम मेरी भावनाओं को चोट पहुँचाने वाला है और साथ ही मेरे स्वामी को भी दुःख देने वाला है। मैं चित्र पर थूक नहीं सकता।''

तब मैंने उस धनी सज्जन से कहाह्वह्व''देखो भाई! तुम्हारा सचिव तुम्हारे चित्र से प्रेम करता है और उसका आदर करता है। यद्यपि यह कागज का एक टुकड़ा ही है, फिर भी इसमें इसे तुम्हारा साक्षात् दर्शन हो रहा है। क्या यह मूर्ति–पूजा नहीं है? इसी प्रकार भक्त मूर्ति में ईश्वर के गुणों का आरोप करता है और उसमें साक्षात् ईश्वर का अस्तित्व अनुभव करता है। उसको मूर्ति में एकाग्रता की साधना सरल लगती है। साधना की प्राथमिक अवस्था में उसका चित्त कोई स्थूल आधार चाहता है जिसमें वह लीन हो सके। क्या अब आप समझ गये?''

उस सज्जन ने कहाह्वह्व''पूज्य स्वामी जी! आप बिलकुल ठीक कह रहे हैं। अब मेरी आँखें खुल गयीं। मुझे आपकी बात बिलकुल जँच गयी। मैं आपसे क्षमा चाहता हूँ।
ह्वह्व स्वामी शिवानन्द

दिव्य जीवन का सन्देश

आप इस जगत् में आध्यात्मिक पूर्णता की प्राप्ति के लिए आये हैं। आप परम एवं नित्य आनन्द की प्राप्ति के लिए यहाँ आये हैं। मानव–जीवन का उद्देश्य है दिव्य चैतन्य की प्राप्ति। जीवन का लक्ष्य है आत्म–साक्षात्कार। मनुष्य इन्द्रिय–भोग–परायण पशु नहीं है। मनुष्य स्वरूपतः नित्य, शुद्ध, मुक्त, अमर तथा दिव्य सत्ता है। अनुभव कीजिए कि 'मैं अमर आत्मा हूँ।' आप सच्चिदानन्द हैं। याद रखिए कि '**अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो**ह्वह्वआप जन्म–रहित, नित्य, अक्षय तथा अपरिणामी हैं।' इस उन्नत चैतन्य में रहने का अर्थ हैह्वह्वजीवन में प्रतिक्षण अचिन्त्य सुख का अनुभव करना, आत्मा में असीम स्वतन्त्रता का अनुभव करना। यह आपका जन्मसिद्ध अधिकार है। यही एकमेव जीवन–लक्ष्य है

हमें सत्य, शुद्धता, सेवा तथा भक्ति के द्वारा इसका साक्षात्कार करना है।

सभी चेहरों में ईश्वर को देखें। सभी की सेवा करें। सभी से प्रेम करें। सभी के प्रति दयालु बनें। कारुणिक बनें। प्रत्येक व्यक्ति को अपनी ही आत्मा समझें। ईश्वर की पूजा का भाव रख कर अपने बन्धुओं की सेवा करें। मनुष्य की सेवा वास्तव में ईश्वर की ही उपासना है।

वेदों, बाइबिल, कुरान तथा सभी धर्मग्रन्थों का हृदय एक ही है। सभी एक कण्ठ से प्रेम एवं समता, भलाई एवं दयालुता, सेवा तथा उपासना के सुमधुर संगीत का गान करते हैं। नाम-रूपों की सीमारेखाओं का त्याग करें। सभी भूतों की एकता का साक्षात्कार करें। अपने आध्यात्मिक प्रेम में सभी को सन्निहित करें। शान्ति के लिए जियें। विश्व-प्रेम के लिए जियें। दिव्य जीवन जियें।

दिव्य जीवन व्यतीत करके मनुष्य अविद्या, दुःख तथा क्लेश से मुक्त हो कर, शोक का अतिक्रमण कर इसी जीवन में अभी और यहीं शान्ति एवं सुख को प्राप्त कर लेता है। दिव्य जीवन मानव-जाति को शान्ति एवं बन्धुत्व की प्राप्ति कराता है। यह मनुष्य को शुद्ध बनाता, उसके स्वभाव को संस्कृत बनाता तथा उसके गुप्त दिव्य रूप को प्रस्फुटित करता है।

स्वामी शिवानन्द

केवल भगवान् का ही चिन्तन

आप सबके लिए मनन करने का आवश्यक तत्त्व यह है कि समय भागता जा रहा है। दिवस सप्ताह में बदल रहे हैं, सप्ताह महीनों में, महीने वर्षों में। एक-एक दिन करके हमारी जीवन-अवधि घटती जा रही है; विभिन्न विकर्षण हमारे मन को लक्ष्य से दूर ले जाते हैं। आप कैसे यह अपेक्षा रखते हैं कि आपका जीवन ईश्वर-साक्षात्कार से अभिषिक्त होगा? प्रबोधन से, मोक्ष से, आनन्द से, शान्ति से और परिपूर्णता से अलंकृत होगा? कैसे यह आशा रखते हैं?

यह केवल तभी सम्भव है जब व्यक्ति निरन्तर भगवान् का, केवल भगवान् का ही चिन्तन करता है, जब व्यक्ति भगवान् के अतिरिक्त अन्य सब विचारों को छोड़ कर केवल भगवान् का ही चिन्तन करता है। ऐसे व्यक्ति के लिए हम लगभग कह सकते हैं कि यदि भगवान् का अनुग्रह भी है तो, ईश्वरानुभति की प्राप्ति इसी जन्म में, बल्कि अभी और यहीं निश्चित है।

जो व्यक्ति अपना मन, अपनी अन्तर्दृष्टि निरन्तर अबाध रूप से भगवान् और केवल भगवान् पर दृढ़तापूर्वक स्थिर रखता है, जो अन्य किसी भी विचार को अपने मन में प्रविष्ट नहीं होने देता, जो पूर्णतया ईश्वर में स्थित है, शत-प्रति-शत, किसी भी अन्य विचार को हस्तक्षेप नहीं करने देताह्वह्वऐसे व्यक्ति का अन्तःकरण स्वयं भगवान् ही हो जाता है; क्योंकि ऐसे व्यक्ति में भगवान् निवास करते हैं, वे उसके अन्तर्मन को, उसकी चेतना को पूर्णतया भर देते हैं और वह ईश्वरीय चेतना की स्थिति में पहुँच जाता हैह्वह्वतब वह मानवीय चेतना में नहीं रहता।

ऐसी स्थिति के लिए हमें प्रार्थना करनी चाहिए। इसके लिए हमें विनम्रता सहित, बिना अहंकार के अथक प्रयत्न करना चाहिएह्वह्वयह जानते हुए कि यह प्रयत्न भी उन्हीं के द्वारा प्रेरित है, उन्हीं की कृपा की शक्ति से हो रहा हैह्वह्वयहाँ मैं कुछ भी नहीं हूँ, केवल एक वही सब-कुछ है। हम उस सर्वशक्तिमान् से, उस सर्वातीत सत्ता से प्रार्थना करते हैं, हम परम पावन गुरुदेव से प्रार्थना करते हैं कि वे यह आशीर्वाद और वरदान कृपापूर्वक आपमें से प्रत्येक को प्रदान करें! ऐसा ही हो! **स्वामी चिदानन्द**

त्याग

एक साधक का जीवन व्यतीत करते हुए व्यक्ति के जीवन में जीवन का सौन्दर्य तथा जीवन के सुख-साधन अनुपस्थित रह सकते हैं। परन्तु क्या एक साधक संसार में उनकी उपस्थिति के विषय में जानता है? उन मनमोहक वस्तुओं के अस्तित्व का ज्ञान भी उसके त्याग या वैराग्य की भावना की बैलेंसशीट में घाटे की एक नकारात्मक प्रविष्टि के समान है। **स्वामी कृष्णानन्द**